पी. एण्ड एस. बैंक राजभाषा

अंकुर

मार्च 2017

सीमावर्ती क्षेत्र विशेषांक

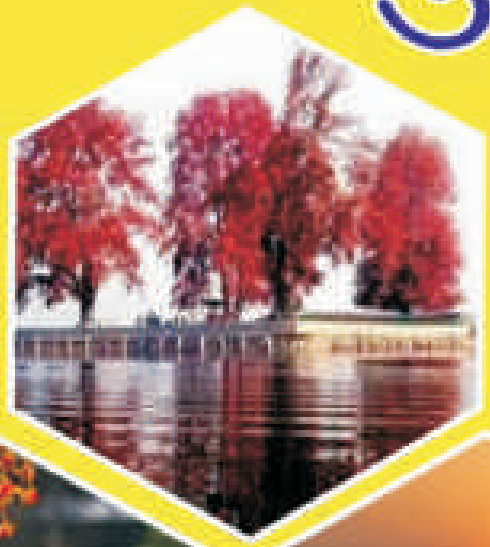

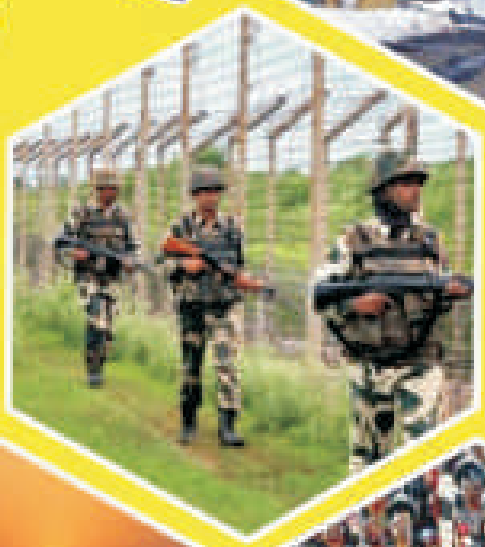

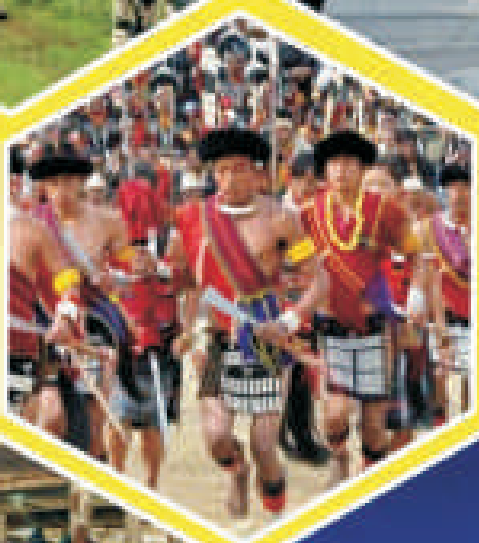

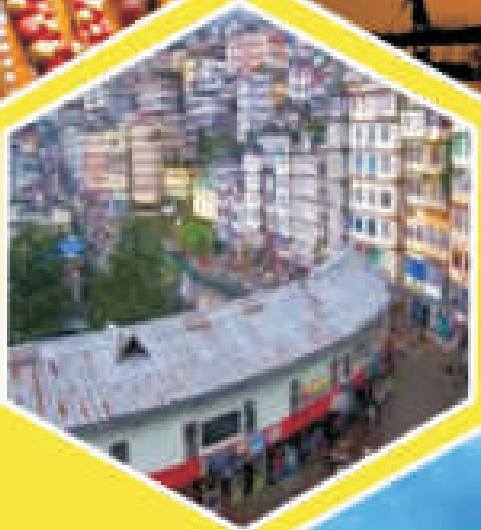

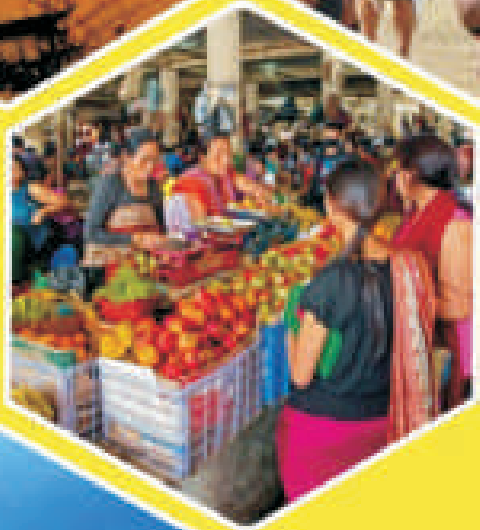

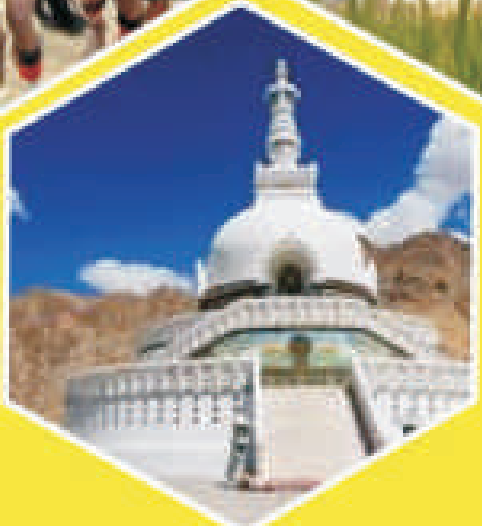

पी.एस.बी

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

Punjab & Sind Bank

(राजभाषा विभाग)

हम साथ-साथ हैं

पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने जीवन बीमा कारोबार के लिए एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस कंपनी के साथ कार्पोरेट एजेंसी टाई-अप किया है। चित्र में बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिंदरबीर सिंह (आईएएस), कार्यकारी निदेशक श्री एम. के. जैन, महाप्रबंधक श्री आर. के बंसल, महाप्रबंधक श्री जी.एस. ढींगरा, एसबीआई लाइफ से उनके बिजिनेस स्ट्रेटेजी के मुख्य अधिकारी श्री अभिजीत गुलानिकर, क्षेत्रीय निदेशक श्री दलजीत सिंह रखड़ा, कंट्री हेड, आल्टरनेट चैनल भी दिखाई दे रहे हैं।

हार्दिक अभिनंदन

हमारे नए कार्यकारी निदेशक श्री फरीद अहमद जी अहमदाबाद की सैटेलाईट शाखा में कार्यग्रहण करते हुए।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)
'बैंक हाउस', प्रथम तल, 21, राजेंद्र प्लेस, नई दिल्ली-110 125

मार्च, 2017

मुख्य संरक्षक
श्री जतिन्दरबीर सिंह, आई.ए.एस.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री एस. के. जैन एवं श्री फरीद अहमद
कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक
श्री दीन दयाल शर्मा
महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक व प्रकाशक
श्री राजिंदर सिंह बेवली
सहायक महाप्रबंधक
(राजभाषा)

संपादक मंडल
श्री राजीव कुमार राय
वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा
डॉ. नीरू पाठक
प्रबंधक
दीपक साव एवं रूप कुमार
राजभाषा अधिकारी

ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in
पंजीकरण सं. : एफ. 2(25) प्रैस. 91
(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 31 मार्च 2017)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

मुद्रक : मोहन प्रिंटिंग प्रेस
E/32, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली - 110015
फोन : 98100 87743

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल / विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	कामदी..... मेरे परिवार की	4
5.	सीमावर्ती क्षेत्र : आर. एस. पुरा	7
6.	350वाँ प्रकाश उत्सव	9
7.	ग्राहक के मुख से.....	10
8.	सात बहनों की दास्तां	11
9.	दिल्ली बैंक नराकास शील्ड व पुरस्कार	14
10.	जम्हूरा वाली गड्डी	16
11.	ज़रा सोचिए	17
12.	फरीदकोट में नराकास का गठन	18
13.	सिरोइ लिली	19
14.	कोहिमा ईपिटफ	20
15.	विमोचन व राजभाषा पोर्टल	21
16.	संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति.....निरीक्षण	22
17.	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	24
18.	खासी जनजाति	25
19.	स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय का उद्घाटन	26
20.	विशेष संगोष्ठियाँ	27
21.	सदा-ए-सरहद	28
22.	लोगों की आस्था व सीमा का बंधन	30
23.	ईमा-कथियन (मणिपुरी लेख हिंदी प्रारूप सहित)	32
24.	भाषा, साहित्य और संस्कृति की विरासत : सीमावर्ती क्षेत्र बिहार	34
25.	पाकिस्तान वाले सीमावर्ती क्षेत्र ग्राम का दर्द	36
26.	तवांग मठ	38
27.	विशेष संगोष्ठी-राजभाषा अधिकारी सम्मेलन	40
28.	संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन और बैंक	41
29.	हिंदी कार्यशालाएं	43
29.	काव्य मंजूषा	44

आपकी कलम से....

आपके पत्र के साथ 'राजभाषा अंकुर' का अक्तूबर-दिसंबर 2016 अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का कलेवर अत्यंत रुचिकर है। पत्रिका की सामग्री बहुत उपयोगी, सूचनाप्रद और समसामयिक विभिन्न विषयों से युक्त है। प्रादेशिक भाषा पंजाबी की रचना को सम्मिलित करके पत्रिका की सार्थकता और रोचकता में वृद्धि हुई है। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों को हमारी हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए अनेकानेक शुभकामनाएँ।

रश्मि दुग्गल
उप महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक, दिल्ली आंचलिक-1, नई दिल्ली

हमें अंकुर पत्रिका का दिसंबर 2016 का अंक मिला। हमने इस "अंकुर" पत्रिका को पढ़ा। यह पत्रिका खूबसूरत होने के साथ-साथ ज्ञानवर्धक है। इस पत्रिका के लिए आप बधाई के पात्र हैं। इस पत्रिका में जिन विषयों का वर्णन किया गया है, लगभग सभी विषय ज्ञानवर्धक हैं। खासकर 'अवध आहलामा' विषय ज्ञानवर्धक और रुचिकर है। इस पत्रिका के लिए इस कार्यालय की शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

डी. कण्णन
आंचलिक प्रबंधक, चेन्नई, पंजाब एण्ड सिंध बैंक

पंजाब एण्ड सिंध बैंक की तिमाही राजभाषा पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का दिसंबर 2016 अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद. कैशलेस अर्थव्यवस्था, बदलते भारत की नई तस्वीर, भीम ऐप, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, विमुद्रीकरण, पुनर्मुद्रीकरण जैसे विषयों को मनोरम ढंग से बिखेरती आपकी पत्रिका सुन्दर बन पड़ी है। 48 पृष्ठों की इस पत्रिका में सामग्री मानो गागर में सागर भरा हुआ है. पंजाबी रूप सहित रचना 'नामक नाम जहाज है' (मनजीत कौर) उल्लेखित करती है. 'अवध आहलामा' (श्रीमती अर्चना शर्मा) लेख में लखनऊ की नवाबी खूबसूरती में चार चाँद लगाने वाले स्मारकों जैसे 'बड़ा इमामबाड़ा', 'छोटा इमामबाड़ा', 'जामा मस्जिद', 'कनॉक टावर', 'रूमी दरवाजा', 'लखनऊ रेजिडेंसी', 'विधान सभा', 'चारबाग रेलवे स्टेशन' आदि की पर्याप्तकीय जानकारी है. लेख 'प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना' (साकेत सहाय) जो 'एक राष्ट्र एक योजना' नीति पर आधारित है, में उससे संबंधित ज्ञानप्रद जानकारी है। अभी भी किसानों में इसकी जागरूकता नहीं है, तभी तो अब तक मात्र 23 प्रतिशत किसान ही बीमे का फायदा उठा पा रहे हैं. 'काव्य मंजूषा' में प्रकाशित कविताएं 'मेरे सपने मेरे अपने' (डॉ. नीरू पाठक), 'ममता' (राजीव रंजन) तथा 'किशनी नायिका आधुनिक परिदृश्य' (मयंक मोहन गोस्वामी) भावनात्मक संबंधों पर रची उम्दा खूब पसंद आई। आर्थिक लेख 'अर्थव्यवस्था की अनिवार्यता : विमुद्रीकरण' (नवनीत कुमार दुग्गल), 'कैशलेस क्रांति' (रूप कुमार), 'मेक इन इंडिया' (प्रमोद कुमार) तथा 'भीम ऐप' (जिसे 'भारत इंटरफेस फॉर मनी ऐप' भी कहा जाता है) पर ज्ञानवर्धक सामग्री दी गई है। लेख 'विश्व शांति का सपना' (शिवानी सक्सेना) में नकारात्मक विचारों जैसे क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार, जलन आदि निकालकर सकारात्मक विचारों को हृदयंगम करने की बात अच्छी लगी। 'प्यारी बुआ' (आरती सिंह) रिश्तों की डोर पर आधारित संवेदनशील कहानी लगी। 'हमारी मातृभाषा हमारा परिचय' में श्री देवेन्द्र सिंह ने अपने राष्ट्र की भाषा हिंदी में काम करने के राष्ट्रीय महत्व को रेखांकित किया है। खिलाड़ियों में रमनदीप तथा दीपा मलिक से संबंधित जानकारी प्रेरक है। प्रियंका गुप्ता ने 'एक भारतीय आत्मा' अर्थात् राष्ट्रीय ऊर्जा तथा राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत हिंदी कवि माखन लाल चतुर्वेदी पर उनकी एक कविता ('दर महान') सहित सारगर्भित जानकारी दी है. बैंक की विभिन्न गतिविधियों से रूबरू कराती यह पत्रिका उपयोगी बन गई है। प्रत्येक पृष्ठ के सुविचार सकारात्मक भाव जगाने में सफल हैं।

डॉ. आर. पी. सिंह
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा),
आईडीबीआई बैंक लिमिटेड (प्रधान कार्यालय), नई दिल्ली.

आपके बैंक की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के दिसंबर 2016 अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सादर धन्यवाद।

पत्रिका में विभिन्न विषयों पर समाहित सामग्री अत्यंत उपयोगी है। विशेष रूप से 'भ्रष्टाचार उन्मूलन में जन-सहभागिता' तथा 'अर्थव्यवस्था की अनिवार्यता-विमुद्रीकरण' दोनों ही लेख पठनीय व ज्ञानवर्धक हैं। इन लेखों के लेखक द्वय को हमारी शुभकामनाएं। 'हमारी मातृभाषा हमारा परिचय' लेख का अंतिम वाक्य 'आज से ही गर्व के साथ अपने हस्ताक्षर हिंदी भाषा में करके इसकी शुरूआत करें' अत्यंत ही प्रेरणास्पद व सुधी पाठकों के लिए अनुकरणीय है। पत्रिका के इस सुंदर व संग्रहणीय अंक के प्रकाशन का पूरा श्रेय संपादक मंडल को जाता है जिनके अथक प्रयासों से इस स्तरीय अंक का प्रकाशन संभव हो पाया। अतः संपादक मंडल के सभी सदस्यों को हम हार्दिक बधाई देते हैं। आगे पत्रिका के आगामी अंक नियमित रूप से भिजवाने का विनम्र अनुरोध करते हैं।

राजीव कुमार अग्रवाल
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली

संपादकीय

साथियो,

वित्तीय वर्ष 2016-17 में बैंकों ने अनेक चुनौतियों का सामना किया और हमारे बैंक के समस्त स्टाफ ने भी माननीय प्रधानमंत्री जी की नीतियों के कार्यान्वयन में बढ़-चढ़ कर कार्य किया और उन्हें सफल भी बनाया। इसके लिए आप सबकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। पिछले दो वर्षों से लगातार राजभाषा अंकुर को दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो रहा है, संपादक मंडल के साथ रचनाकार इसके लिए बधाई के पात्र हैं। वैसे तो राजभाषा अंकुर पत्रिका का प्रत्येक अंक अपने में कुछ विशेष समाहित किए होता है किंतु पत्रिका का यह अंक ''सीमावर्ती क्षेत्र विशेषांक'' अपने आप में एक अनूठा प्रयास है। यह भारत की विशाल भूमि तथा जल सीमाओं से जुड़े क्षेत्रों की प्राकृतिक छटा, वहाँ के लोगों का रहन-सहन, खान-पान, उनकी विशेषताओं और इसके साथ ही वहाँ के जन-जीवन के जोखिम, त्रासदी, वहाँ की परेशानियों तकलीफों को, लेख, कविता, वृत्तांत आदि के द्वारा दिग्दर्शन कराता है। वस्तुतः हमारे देश में इतनी भौगोलिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विभिन्नताएं हैं कि कुछ पृष्ठों में समाहित करना कठिन कार्य है किंतु इस अंक में गागर में सागर मुहावरे को चरितार्थ करने का प्रयास किया गया है।

इस अंक में हमारे लिए सबसे उत्साहवर्धक बात यह रही कि दूरदराज की पूर्वोत्तर की शाखाओं के स्टाफ सदस्यों ने भी पत्रिका के साथ अपना जुड़ाव महसूस किया है। मणिपुरी भाषा में 'ईमा-कथिथल' लेख महिला सशक्तिकरण का एक सुंदर उदाहरण बन पड़ा है। कोहिमा शाखा की सुश्री चिंगहोयेंबम टोंग सिंह के लेख 'कोहिमा ईपिटफ' में देश के वीरों की यादगार गाथा हृदय को झकझोर देती है। इसी प्रकार अरूप सरकार (तवांग मठ), मनोज कुमार (खासी जाति), चारुबाला सईक (सिरोई लिली) तथा दीपक लाल (सात बहनों की दास्तां), इन सभी लेखों में आपको सीमावर्ती पूर्वोत्तर क्षेत्र के इतिहास और इसकी प्राकृतिक सुंदरता से अवगत करवाने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त बैंक के स्टाफ सदस्यों ने स्वयं भारत पाक सीमा पर जाकर वहां की ज्वलंत समस्याओं से पत्रिका को जीवंत बनाने का प्रयास किया है। पाकिस्तान से लगते सीमावर्ती क्षेत्रों का दर्द आपको श्री बलबीर सिंह ग्रोवर के 'आर.एस.पुरा' वाले लेख में तथा बैंक के ग्राहक श्री प्राणनाथ के 'झंग' वाले लेख में स्पष्ट झलकेगा। श्री राजिंदर सिंह बेदनी ने अपने ही दादके परिवार की त्रासदी को 'त्रासदी.....मेरे परिवार की' में बड़ी ही संजीदगी से प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही काव्य-मंजूषा, कहानी, कार्टून तथा अन्य साहित्यिक विधाओं से भरपूर इस अंक को भी रुचिकर बनाने का प्रयास किया गया है। पत्रिका के बहुआयामी विकास के लिए आप सभी की सहभागिता अपेक्षित है।

आशा है 'राजभाषा अंकुर' का यह अंक भी आपको पसंद आएगा। पत्रिका आपको कैसी लगी, कृपया हमें अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत कराएं।

(दीन दयाल शर्मा)
महाप्रबंधक (राजभाषा)

त्रासदी...... मेरे परिवार की

राजिंदर सिंह बेवली

पंछी नदिया पवन के झौंके, कोई सरहद ना इन्हें रोके, सरहदें इन्सानों के लिए हैं, सोचो?? तुमने और मैंने.. क्या पाया...... इंसा हो के.....

जावेद अख़्तर ने कितना सही लिखा है..... कितनी गहराई है इन पंक्तियों में। पर कभी-कभी मैं समझता हूँ कि आदमी और इन्सान में भी तो फर्क होता है। सभी मनुष्य यदि इन्सान ही बन जाते, तो इतने दंगे, इतने फसाद, इतनी अशांति, इतना आतंकवाद क्यों होता? दुनिया में जितनी भी लड़ाइयाँ, जितने भी युद्ध हुए हैं, उनके गर्भ में झाँकेंगे तो हम देखेंगे कि ये या तो धर्म के कारण या फिर जातियों के कारण हुए हैं। काश हम सब भी परिंदे, हवा या नदियों की तरह होते जो कहीं भी आसानी से आ-जा सकते। लेकिन ये ख़्याल कल्पना मात्र ही तो है।

मैं अपना उपनाम 'बेवली' लिखता हूँ। वास्तव में बेवली कोई जाति नहीं है बल्कि पाकिस्तान के एक गाँव का नाम है और एक बहुत बड़ी त्रासदी के कारण ही इस गाँव के लोगों ने निर्णय लिया था कि वे अपने नाम के आगे अपने गाँव 'बेवल' का नाम लगाया करेंगे ताकि भविष्य में यदि वे कहीं भी मिलें, तो एक दूसरे को पहचान सकें। भारत में तो सरहद के पार के बँटवारे को बहुत ही नज़दीक से देखा है।

मेरे दादा जी ने अपनी आग बुझाने के लिए, रेत पर अपने शरीर को रगड़ा और आग बुझाई। जली हुई अवस्था में उन्हें आर्मी अस्पताल में भर्ती करवाया गया। उन्हें बचाया न जा सका और तीसरे दिन उनकी मौत हो गई। सरहदी बँटवारे की भेंट मेरे पूर्वजों की यह पहली मौत थी।

सरहदों का बँटवारा भले ही 1947 को हुआ हो किंतु हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य तो बहुत पहले से ही रहा है। मेरे दादाजी भी इसी वैमनस्य.... ..इसी दुश्मनी की भेंट चढ़े हैं।

पाकिस्तान के बेवल गाँव में हमारी दुकानें हुआ करती थीं। बात जनवरी 1931 की है। हमारी दुकानों के नज़दीक ही बरकत राय नाम का एक व्यक्ति रहा करता था। कहा जाता है कि मुस्लिम समुदाय के किसी व्यक्ति ने बरकत राय के लड़के के मुँह में ज़बरदस्ती गोमांस डाल दिया था। जो ख़ून बर्दाश्त नहीं कर सका और बदला लेने के लिए बरकत राय ने मुस्लिम समुदाय के लड़के के मुँह में सुअर का मीट डाल दिया। पहले से ही जातीय समीकरण बदलने लगे थे और अब यह एक नया मोड़ लेने को तैयार थे। मेरे दादाजी जमादार प्रेम सिंह (अब यह पदनाम नायब सूबेदार हो गया है) पूर्व में सेना में थे और बाद में अपनी एक दुकान पर बैठा करते थे। जनवरी 1931 के एक दिन जब वे अपनी दुकान में बैठे थे तो मुसलमानों की एक टोली आई और कहा जमादार साहब कैसे हैं? आपसे तो हमारी कोई दुश्मनी नहीं है आप चिंता न करें। यहाँ उल्लेखनीय है कि दादाजी की बंदूक पहले ही बरकतराय ने यह कहकर माँग ली थी कि आपकी तो किसी से दुश्मनी है नहीं लेकिन हमें अपने बचाव के लिए बंदूक की ज़रूरत होगी। एक पड़ोसी होने के कारण दादाजी बरकतराय को ना नहीं कह सके। थोड़े समय बाद दूसरी टोली आई और कहा कि जमादार साहब भले ही आपकी हमसे कोई दुश्मनी नहीं है किंतु माहौल ख़राब है.... आप सतर्क रहें। ऐसा ही कुछ दोहराते हुए दंगाइयों की तीसरी और चौथी टोली भी निकल गई। इस चेतावनी के बाद दादाजी अपनी दुकान बंद करने को तैयार हुए ही थे कि इतने में पाँचवीं टोली आई। दादाजी को उल्टा सीधा कहना शुरू कर दिया। एक व्यक्ति ने दादाजी को एक मोटी रकम लौटानी थी और काफी समय से माँगने के बाद भी पैसा देने में आना कानी कर रहा था। सुना है कि उसी टोली में वह भी था। मौके का फायदा लेने के लिए उसने जमादार प्रेम सिंह पर मिट्टी का तेल छिड़क कर उन्हें आग लगा दी। इस जघन्य कांड के बाद वह टोली निकल गई। दुकान के सामने रेत पड़ी थी। दादा जी ने अपनी आग बुझाने के लिए, रेत पर अपने शरीर को रगड़ा और आग बुझाई। जली हुई अवस्था में उन्हें आर्मी अस्पताल में भर्ती करवाया गया। उन्हें बचाया न जा सका और तीसरे दिन उनकी मौत हो गई। सरहदी बँटवारे की भेंट मेरे पूर्वजों की यह पहली मौत थी।

समय अपनी रफ़्तार से आगे बढ़ता रहा और साल 1947 भी आ गया। आज़ादी हमें अगस्त 1947 में मिली थी लेकिन मार्च 1947 का महीना मेरे दादा जी के परिवार के लिए बहुत भारी था।

यहाँ मैं 2 पत्रों का उल्लेख करना चाहूँगा जो आज भी हमारे पास मौजूद हैं। हालांकि दोनों ही पत्र घरेलू पत्र हैं लेकिन मेरे परिवार के लिए इन पत्रों का ऐतिहासिक महत्त्व है। पहला पत्र मेरी मेरी दादी जी

बर्तनों में जूठन बिलकुल न छोड़ें, कितनों को भोजन मिल जाएगा।

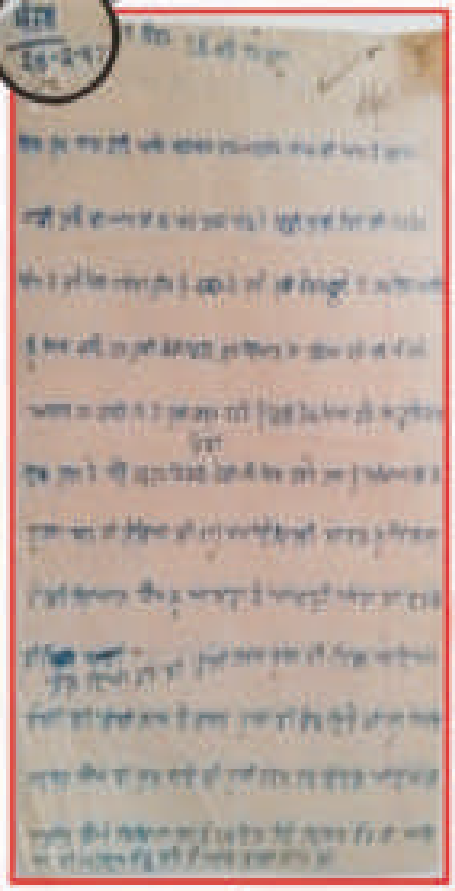

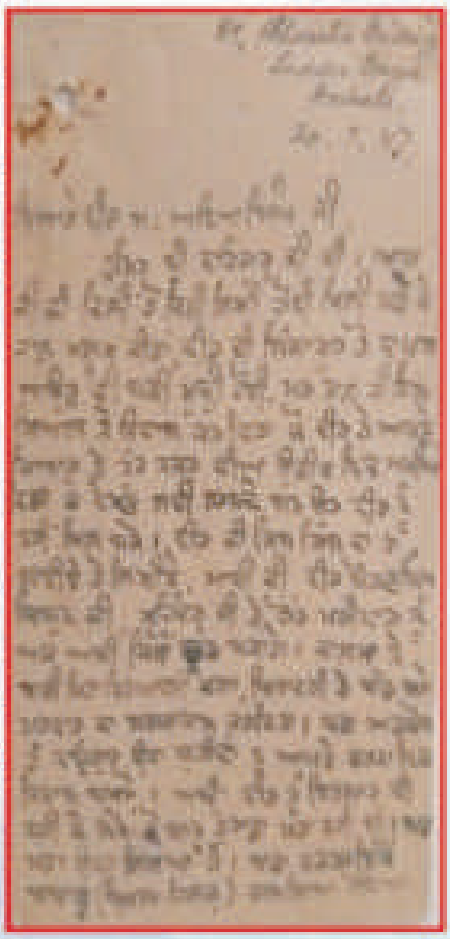

"(लाजवंती) ने 28.02.1947 को वेयन गाँव से अपने बेटे स. आत्मा सिंह (मेरे पिताजी) को लिखा था जो उन दिनों फौज की नौकरी के सिलसिले में सिंगापुर में रह रहे थे। पहले आप पत्र देख लें :

मेरी दादीजी के लिखे ऊपर वाले पत्र की मुख्य-मुख्य बातों का हिंदी अनुवाद इस प्रकार है :

"वेयन, 20.2.47.... लिखा तुम लाजवंती पासों बरखुरदार अवतार सिंह जी (पिताजी को दादी प्यार से अवतार कहा करती थीं) आपको बरखुरदारी पहुँचे जी। आप जी का शुभ पत्र पढ़ कर बड़ी खुशी हुई जी। स्वर्ण सिंह के रुपए मिल गए 29 तारीख को। स्वर्ण के रुपए आप भेजने लगे हैं, हर महीने मिल जाते हैं। आप मेरी चिट्ठी की ओर ध्यान न किया करें, मैं कभी आलस कर जाती हूँ, लेकिन आप हफ्ते भर में चिट्ठी अवश्य भेज दिया करो। पिछले दिनों आपने बहुत ही देर चिट्ठी लिखी थी, इसलिए आपको लिखा था कि चिट्ठी नहीं मिली। 50 रुपए माने को मिल गए जी, ज्ञान सिंह से कहिए कि अपनी माताजी को भी भेज दिया करे। जंगीनाम (दादाजी द्वारा फौज में बेहतर सेवाएं देने का इनाम) आपको मिल गया होगा। जंगीनाम के कागज आपको भेज दिए थे। 20 रुपए स्वर्ण सिंह को मिल गए थे, आप वेयन कब तक आओगे जी। अजीत सिंह ने लिखा था कि बिशन कौर भी आई थी। 15 दिन यहां रह के घर चली गई। स्वर्ण सिंह ने आया था। राशन कार्ड बन गए थे, आप किसी बात की चिंता न करें" आदि आदि आदि.......

यह पत्र पिताजी ने 12.03.1947 को प्राप्त किया था (पत्र पर लिखा हुआ है)। मुझे जहाँ तक पता है 12.03.1947 तक दादीजी सहित पूरा वेयन गाँव ही उजड़ चुका था।

अब दूसरा पत्र देखिए जो मेरी दादीजी की बहन के दामाद श्री हरनाम सिंह ने दिनांक 20.07.1947 को मेरे पिताजी को, जब वे पटियाला आए थे, तब लिखा था। यह पत्र भी पंजाबी भाषा में लिखा गया था। यदि आपको पंजाबी आती है तो पढ़ लीजिए

पत्र का मजमून इस प्रकार है :

"अंबाला : 20.7.47 : फतेह श्री वाहेगुरु जी की। आप जी की दिल्ली से चिट्ठी लिखी हुई मिली। पढ़कर हाल मालूम हुआ। वीर जी सिंगापुर से वापस आने की बड़ी खुशी हुई, पर साथ ही इस ख्याल ने उदास कर

अपना व्यवहार 'शून्य' की तरह रखें जो दूसरों से मिलकर उनका मूल्य बढ़ा दे।

> ऊँची-ऊँची आग की लपटों में पूरा गुरुद्वारा धूं-धूं कर जल उठा। हर तरफ चीखने चिल्लाने की और वाहेगुरु - वाहेगुरु की आवाजें आसमान को चीरती हुई आने लगीं। हर तरफ त्राहि-त्राहि का आलम था और फिर...... फिर...... सब कुछ शांत हो चुका था...... सब.... कुछ......आवाजें भी और..... आग भी।

दिया कि वीर और अपने प्यार के नजर-नूर की आस में, जो आंखें बिछाकर देखने के लिए तरस रहे थे, वे सब वीर को नहीं मिल सके। वीर जी किस-किस का नाम लूं और लिखूं। मासी जी {मेरे दादी जी (लाजवंती)} जिन्होंने ऊपर वाला पत्र लिखा था 28.02.47 को, वीर मोहन सिंह (मेरे ताया जी), विद्या जी (मेरी बड़ी बुआ), मोहिंद्र जी (मेरी छोटी बुआ) और परिवार (परिवार के अन्य सभी सदस्य) को आज हम कहाँ ढूंढ सकेंगे। जालिमों ने हमारी पिता पुरखों जमात बिरादरी और हमारे सारे परिवार का सत्यानाश कर दिया। बड़ा अफसोस है, वाहेगुरु उन शहीदों को अपने चरणों में निवास बख्शे। हम वीर को इत्तलाह भी नहीं दे सके क्योंकि हमें तुम्हारा पता ठीक से नहीं मालूम था। हमारा पता ऊपर लिखा है हमारा दफ्तर यहां से (सबाथू) शिमला हिल्स चला गया है। पर विद्यावंती यहीं रही थी। मैंने छुट्टी ली हुई है। बड़ा अच्छा होता जो आप यहीं आ जाते। कोशिश करेंगे कि आपको पटियाला मिल सके। सरदार ध्यान सिंह, गोपाल कौर को सत श्री अकाल। छोटों और छोटियों को प्यार। अफसोस है कि हम पिछले अपने किसी भी अजीज के दर्शन नहीं कर सके। वर्मा वालों का पता लिख रहे हैं। आपका, हरनाम सिंह।"

वास्तव में हुआ यूं था कि पहले वाला पत्र के लिखने के कुछ ही दिन बाद वो मनहूस दिन भी आ गया था, जब पूरा का पूरा बेवल ही तबाह हो गया। तीन दिन दंगे चले (लगभग 10, 11, 12 मार्च 1947)। मुसलिमों की संख्या बहुत अधिक थी और हिंदू और सिखों का बचना बहुत ही मुश्किल लग रहा था। सारे लोग गुरुद्वारे में इकट्ठे हो गए। दंगाइयों की मर्जी थी कि मर्दों को मार दिया जाए और महिलाओं को उठा कर ले जाया जाए। दंगाइयों की आवाजें गुरुद्वारे में गूंज रही थीं और बीबियों और बेटियों के नाम ले लेकर गंदी जुबान का प्रयोग किया जा रहा था। तीन दिनों तक भूखे प्यासे लोग गुरुद्वारे के ऊपर जा जाकर सफेद कपड़े लहरा रहे थे ताकि कहीं से कोई मदद मिल जाए और वे जिंदा भारत पहुंच सकें। जो अंदर थे, भूख प्यास से बेहाल बहुत बुरी हालत में थे और तय कर चुके थे कि सभी सामूहिक आत्मदाह कर लेंगे किंतु मुसलमानों के हाथ अपनी इज्जत नहीं जाने देंगे। कुछ मर्द बाहर मुकाबला करने के लिए निकले जिनमें मेरे ताया जी और चाचा जी भी थे, किंतु दंगाई तो पूरी तैयारी के साथ आए थे। मुकाबला किया भी गया..... लेकिन आखिर कब तक किया जाता। जो बाहर थे, वीर गति को प्राप्त हो गए और जो अंदर थे उन्होंने गुरुद्वारे के बिस्तर और लकड़ियों को लेकर आग लगा ली। ऊँची-ऊँची आग की लपटों में पूरा गुरुद्वारा धूं-धूं कर जल उठा। हर तरफ चीखने चिल्लाने की और वाहेगुरु - वाहेगुरु की आवाजें आसमान को चीरती हुई आने लगीं। हर तरफ त्राहि-त्राहि का आलम था और फिर...... फिर...... सब कुछ शांत हो चुका था...... सब.... कुछ......आवाजें भी और..... आग भी। मेरी दादीजी, मेरी एक नई नवेली ब्याहता बुआ सहित तीन बुआ, उनके बच्चे, मेरे पिताजी की मामीजी और मामाजी का पूरा परिवार और पूरा बेवल गाँव। बदनसीबी का आलम यह था कि सेना अंत तक बेवल गाँव में मदद के लिए नहीं पहुंच सकी। वही बचा जो उस समय बेवल से बाहर था। जालिमों ने सभी घरों का सत्यानाश कर दिया। घरों को लूट लिया और मकानों में तोड़-फोड़ की और इस कदर आग लगा दी कि बाद में, कुछ लोग बताते हैं कि पहचानना भी मुश्किल था कि ये वही बेवल है जो कुछ दिन पहले एक खुशहाल गाँव था।

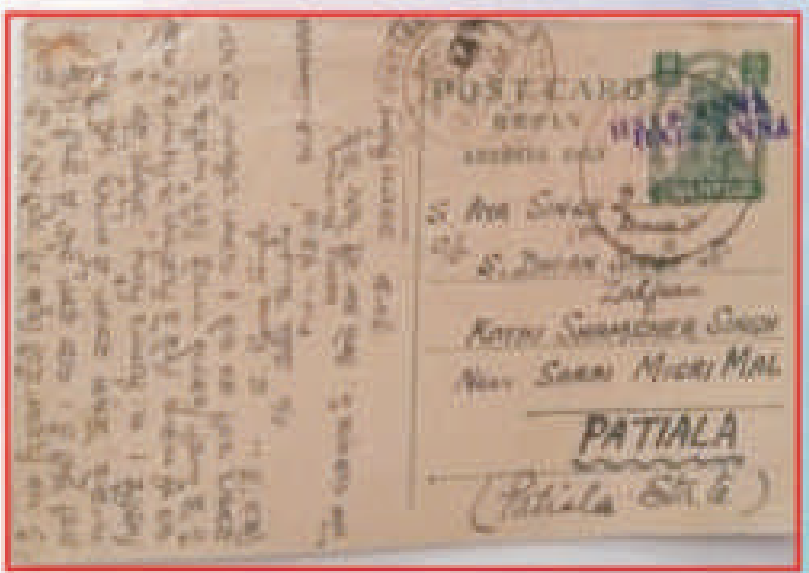

सिंगापुर में बैठे मेरे पिताजी ने रेडियो पर सुना था कि पूरा का पूरा बेवल गाँव खत्म हो चुका है। बाद में हिंदुस्तानी फौज भारत आ गई थी और पिताजी भी। कैसे दिन रहे होंगे? क्या बीती होगी उन लोगों पर? बताया जाता है रात भर खेतों में चलते, रेंगते हुए, झाड़ियों और कांटों से छिलते हुए, बहुत बड़ा जोखिम उठाते हुए, लहूलुहान हालत में केवल दो व्यक्ति ही बेवल गाँव से भारत में सुरक्षित पहुंच पाए थे। और.....

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
प्र.का.राजभाषा विभाग

मुश्किल इस दुनिया में कुछ नहीं होता, फिर भी कुछ लोग अपने इरादे बदल लेते हैं।

सीमावर्ती क्षेत्र : आर. एस. पुरा

बलबीर सिंह ग्रोवर

जब भी हम भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों की बात करते हैं, सर्वप्रथम हमारे मस्तिष्क में भारत के उत्तर में स्थित राज्य जम्मू और कश्मीर आता है। जम्मू जिले में स्थित एक तहसील है, जिसका नाम है 'रणबीर सिंह पुरा'। इसका नाम डोगरा राजवंश के शासक महाराजा रणबीर सिंह के नाम पर पड़ा। यह क्षेत्र भारत-पाकिस्तान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित है। यहां पर बस के माध्यम से पहुंचा जा सकता है।

1947 से पहले यह सियालकोट रेलवे स्टेशन के माध्यम से भारत के अन्य क्षेत्रों से जुड़ा हुआ था। परंतु आज़ादी के बाद यह पाकिस्तान के पास चला गया। स्टेशन वज़ीराबाद और नरोवाल (दोनों पाकिस्तान में) के साथ भी जुड़ा था। यह स्टेशन लगभग 1867 में बनाया गया था। 1947 में अंतिम बार यहां पर रेल रुकी थी जो पाकिस्तान से आए हुए शरणार्थियों से भरी हुई थी वे सभी शरणार्थी यहां पर बस गए थे इसलिए इस क्षेत्र का दूसरा नाम नवांशहर है। सुचेतगढ़ (भारत-पाक सीमा) आर.एस. पुरा से लगभग 10 किलोमीटर दूर है। आज़ादी से पहले, सुचेतगढ़ में करों के संग्रह के लिए एक पोस्ट का निर्माण किया गया था। अब इसे सीमा सुरक्षा बल की पोस्ट के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस पोस्ट के पास एक ऐतिहासिक रघुनाथ मंदिर है जो अपने आप में बहुत महत्व रखता है। मंदिर परिसर में एक पुरानी सराय है, जिसका प्रयोग यात्रियों के लिए आरामगाह के रूप में किया जाता था।

यहां के लोगों द्वारा मुख्य रूप से डोगरी, पंजाबी, उर्दू व हिंदी बोली जाती है। मुख्य व्यवसाय खेती व पशुपालन है। यहां का बासमती चावल विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए है।

आर. एस. पुरा के साथ लगती सीमा पर आंचलिक प्रबंधक मुरादाबाद श्री बलबीर सिंह ग्रोवर, राजभाषा प्रबंधक श्री निखिल शर्मा व अन्य।

बैंक के ग्राहक श्री विजय कुमार, अपने घर में गिरे गोले दिखाते हुए। उनके साथ शाखा प्रबंधक श्री चंद्र ग्रोवर भी खड़े हैं।

हम रणबीर सिंह पुरा के अरनिया गांव में गए जो यहां से 14 किमी. की दूरी पर स्थित है। सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण यहां के लोग तनावपूर्ण वातावरण में रहते हैं। पाकिस्तान के द्वारा कभी भी युद्ध विराम का उल्लंघन कर गोलीबारी की जाती है। पाकिस्तानी गोलीबारी से कई लोग घायल हो जाते हैं, मवेशी मारे जाते हैं और संपत्ति का भारी नुकसान होता है। नुकसान पहुंचाने के लिए ही पाकिस्तान द्वारा यह हरकत की जाती है, जिससे इस क्षेत्र का विकास न हो। हमने यहां पर देखा कि सीमावर्ती होने के कारण इस क्षेत्र में कच्ची सड़कें हैं, लोगों के घरों में तार तो है मगर बिजली नहीं है।

यहां रहने वाले एक किसान विजय कुमार जिनकी आजीविका का मुख्य स्रोत पशु पालन व खेती था, लेकिन विभाजन के बाद उनके खेत पाकिस्तान की सीमा में चले गए। अब वे केवल दूध बेचकर अपने परिवार का पालन-पोषण करते हैं। वे बताते हैं कि उनके घर में 4 भैंसें और 2 गायें हैं। वे अपने सभी पशुओं को परिवार का सदस्य मानते हैं। कुछ दिनों पहले एक गाय ने बछड़े को जन्म दिया उनके परिवार में एक नए सदस्य का आगमन हुआ था। सभी खुशी से झूम रहे थे। बछड़े को पैदा हुए अभी 2 ही दिन हुए थे। शाम का समय था वे अपने बछड़े को निहार रहे थे और मन ही मन खुश हो रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे एक पिता अपनी नवजात संतान के देख कर होता है। उन्हें क्या पता था कि वह अपने बछड़े को अंतिम बार देख रहे हैं। घर के अंदर जाकर सो गए। रात के लगभग 3.00 बजे तेज एक ज़ोर का धमाका हुआ जिससे उनकी आंखें खुल गई जब उन्होंने बाहर आकर देखा कि जहां पर

उन्होंने अपने बाड़े को बांधा हुआ था वहां पर एक मोटा गोला आकर गिरा और..................जिस बाड़े को वह शाम को देखकर खुशी से सोए थे, वह उस बम के धमाके में मारा जा चुका था।

उसी गांव में रहने वाले हरनाम सिंह कहते है कि "हर पिता के जीवन में सबसे खुशी का दिन वह होता है जब वह अपनी बेटी की शादी कर रहा होता है।" उन्होंने अपनी बेटी की शादी पास ही के गांव में रहने वाले सतनाम सिंह से तय की थी, वे शादी की तैयारियों में पूर्ण रूप से लगे हुए थे। नवंबर का समय था, मौसम में हल्की-हल्की ठंड थी। आखिर वह दिन आ गया शाम के लगभग 6.00 बजे थे बारात उनके दरवाजे पर आ चुकी थी। चारों तरफ बैंड-बाजों की आवाज आ रही थी बड़ा ही खुशनुमा माहौल था सभी खुशी से झूम रहे थे। उनकी बेटी मनदीप कौर अपने दूल्हन के जोड़े में सजी हुई नए जीवन के सपने देख रही थी। बारातियों के स्वागत के लिए उन्होंने बहुत सारे इंतजाम किए हुए थे कि अचानक ही गोलियों की बरसात होने लगी सभी लोग यहां से वहां भागने लगे कि एक मोर्टार का गोला आकर गिरा और जोर का धमाका हुआ चारों तरफ लाशों के ढेर ही ढेर..................इतना कहते-कहते उनकी आंखों में बहुत अधिक आँसू आए और इसके बाद वो बोलने की स्थिति में नहीं थे।

एक अन्य निवासी राजेंद्र कुमार कहते हैं कि 24 अक्तूबर 2016 का दिन था वे अपने खेत में दिनभर काम करके थके-हारे अपने घर पर आए और आंगन में बैठ गए। शाम का समय था चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था चंद्रमा की शीतल रोशनी उनके घर को सुशोभित कर रही थी। वे अपनी माँ के पास बैठ कर बातें कर रहे थे कि अचानक पाकिस्तान द्वारा गोलीबारी करना शुरू कर दिया। एक गोली उनकी माँ को आकर लगी जिससे उनकी मृत्यु हो गई।

श्री राजेन्द्र कुमार, इसी गेट को पार करती हुई पाकिस्तानी गोलियों ने इनकी माँ को घायल कर दिया था।

न पूछो जमाने को, क्या हमारी कहानी है,
हमारी पहचान तो ये है, कि हम सिर्फ हिंदुस्तानी हैं ......!!!

इतनी विषम परिस्थितियों में भी लोगों द्वारा यह स्थान ना छोड़ने के दो मुख्य कारण हैं। पहली, उनकी विश्व प्रसिद्ध 'आर.एस. पुरा बासमती' धान की फसल, जो लगभग तैयार है और दूसरा, वे अपने मवेशियों को अकेला नहीं छोड़ना चाहते, जो कि उनकी आजीविका का प्रमुख स्रोत है।

रणबीर सिंह पुरा तहसील के अन्य एक गांव सुचेतगढ़ में रहने वाले एक किसान हरीराम कहते हैं कि 'हम ऐसी स्थिति में फसलों को नहीं छोड़ सकते, हमने इसमें बहुत कुछ निवेश किया है। उन्होंने कहा कि, यदि हमारी फसल क्षतिग्रस्त हो गई, तो हम पूरी तरह बिखर जाएंगे, अधिकांश लोग अपनी जिंदगी को जोखिम में डाल कर और अपने मवेशियों की खातिर सीमावर्ती क्षेत्रों में रहते हैं।

एक अन्य किसान, प्रकाश सिंह ने कहा कि वे अपने पशुओं को सुरक्षित क्षेत्रों में नहीं ले जा सकते हैं, जो प्रशासन द्वारा बनाया गया सुरक्षित स्थान यहां से कई किलोमीटर दूर स्थित है। उन्होंने कहा कि पशु हमारी आजीविका का प्रमुख स्रोत हैं, 'हम अपने मवेशियों को मरने के लिए नहीं छोड़ सकते,'।

अपनी सारी जिंदगी की बचत करने के बाद, सुच्चा सिंह (60) ने एक घर का निर्माण किया, जो सीमा से इतना पास है कि आप नंगी आंखों से अंतरराष्ट्रीय सीमा को देख सकते हैं, लेकिन वे अपने परिवार के साथ अपने घर में रहने की बजाय बंकरों में ज्यादा समय बिताते हैं। सुच्चा सिंह कहते हैं कि 'मैंने जीवन की सारी बचत खर्च करने के बाद मैंने हाल ही में इस घर का निर्माण पूरा कर लिया है, लेकिन सीमा पार से लगातार संघर्ष विराम के उल्लंघन के कारण, मैंने और मेरे परिवार ने बंकरों को ही अपना घर बना लिया है। पाकिस्तान द्वारा युद्ध विराम का उल्लंघन करके गोलियां व मोर्टार के गोले छोड़े जाते हैं जिनके निशान आप यहां पर स्थित घरों में देख सकते हैं।

'हमारे घरों पर बम और गोलियों की वर्षा होती है....... पाकिस्तानी गोलाबारी के कारण कई घर पूर्ण क्षतिग्रस्त हो गए हैं।

कोरोतान्ना खुर्द गांव के एक निवासी शमशेर सिंह डिंगा का घर हाल ही में हुए युद्ध विराम के उल्लंघन के कारण पूर्ण क्षतिग्रस्त हो गया है। वे केवल सीमा पर स्थित बंकरों की वजह से जीवित हैं।

कुछ लोगों ने कहा, 'ये बंकर हमारे लिए दूसरा घर बन गए हैं, इन बंकरों की वजह से ही आज हम जीवित हैं'।

ये पेड़ ये पत्ते ये शाखें भी परेशान हो जाएं,
अगर परिंदे भी हिंदू और मुसलमान हो जाएं ।

न मस्जिद को जानते हैं, न शिवालों को जानते हैं,
जो भूखे पेट होते हैं, वो सिर्फ निवालों को जानते हैं।

मैं अमन पसंद हूं, मेरे शहर में दंगा रहने दो,
लाल और हरे में मत बांटो, मेरी छत पर तिरंगा रहने दो।

औषधिक प्रबंधक (गुरुग्राम)

प्रधान कार्यालय स्तर पर आयोजित श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का 350वाँ प्रकाश उत्सव :

कुछ झलकियाँ

ग्राहक के मुख से

अरुण रजक

पंजाब एण्ड सिंध बैंक अपनी उत्कृष्ट ग्राहक सेवा से सच्चे अर्थों में ग्राहक सेवा को परिभाषित कर रहा है। मैं अरुण कुमार रजक व मेरे पार्टनर्स, पंजाब एण्ड सिंध बैंक (जहाँ सेवा ही जीवन ध्येय है) से वर्ष 2006 से जुड़े हुए हैं। हमारे व्यवसाय का सफर पंजाब एण्ड सिंध बैंक के साथ शाखा कार्यालय महाराजपुर, पोस्ट: आधारताल, जिला: जबलपुर (म.प्र) में वर्ष 2006 में प्रारंभ हुआ जो आज तक अनवरत चल रहा है। शाखा में हमारा खाता "मेसर्स पवन इंजीनियरिंग वर्क्स" के नाम से है। आज हमारी कंपनी जबलपुर के मुख्य औद्योगिक क्षेत्र में लगभग 30,000/- वर्ग फुट क्षेत्र में फैली हुई है जिसमें 100 कर्मचारी कार्यरत हैं।

वर्ष 2006 में बैंक द्वारा मुझे 3 लाख रुपए की ऋण सीमा स्वीकृत की गई थी, जो आज बढ़कर 15 लाख रुपए हो चुकी है। बैंक के सकारात्मक रवैये से हमारा कार्य इतना बढ़ गया है कि मैंने हाल ही में लिमिट 15 लाख रुपए से बढ़ाकर 25 लाख रुपए करने के लिए आवेदन किया है। मुझे व मेरे पार्टनर्स को इस बैंक ने क्रमशः 8 लाख रुपए व 4 लाख रुपए का गृह ऋण भी प्रदान किया है। फर्म के अन्य पार्टनर्स को भी बैंक ने वाहन ऋण भी स्वीकृत किया है। इन सब बातों का आशय यह है कि बैंक हमारे व्यावसायिक क्षेत्र से लेकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इस प्रकार घुलमिल गया है कि बैंक को अलग करके देखना अब हमारे लिए शून्य सा प्रतीत होता है।

यह बैंक का ही आशीर्वाद है कि जब देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान का आह्वान किया तब नगर निगम जबलपुर ने हमारी कंपनी को 500 कचरे की ट्रॉली बनाने का वर्क-ऑर्डर दिया और हमने नगर निगम जबलपुर का यह कार्य निर्धारित समयावधि में पूरा किया। हमारी कंपनी आज मोबाइल टॉवर, पानी टंकी, पेट्रोल टंकी जैसे अन्य महत्वपूर्ण व उपयोगी सामग्री तैयार करती है।

फर्म में हम कुल चार पार्टनर्स हैं जिन्होंने कंपनी के कार्यों से परे अपने व्यक्तिगत कार्य हेतु बैंक से विभिन्न सुविधाएं प्राप्त की हैं। मैं यह सब बात कंपनी के प्रतिनिधि के तौर पर कह रहा हूं। मैं और मेरे पार्टनर्स आज समाज के जिस उच्च स्थान पर खड़े हैं और जो सम्मान हमें प्राप्त है, निश्चित तौर पर यह सब बैंक के सहयोग से ही संभव है। आज बाज़ार में हम अपने ग्राहकों के बीच गहरी पैठ बना चुके हैं।

मुझे यह कहने में कतई संकोच नहीं है कि आज जिस मुकाम पर कंपनी खड़ी है, इसमें बैंक का योगदान अविस्मरणीय है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि बैंक ऊँचाइयों को छूते हुए अपनी उत्कृष्ट ग्राहक सेवा से सामान्य जन के जीवन स्तर को सुदृढ़ करे।

सादर।

मेसर्स अरुण कुमार रजक व पार्टनर्स शाखा महाराजपुर,

जिला जबलपुर (म.प्र.)

जीवन एक बारगी उपहार है, इसका उपयोग अच्छे ढंग से करें।

सात बहनों की दास्तां

दीपक साव

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती।

उक्त पंक्तियों में महाकवि जयशंकर प्रसाद ने भारतवर्ष के अमिट इतिहास को हिमालय की महानता से जोड़ते हुए इसकी सुंदरता का वर्णन किया है। महान हिमालय भारत के जम्मू कश्मीर से लेकर पूर्वोत्तर राज्य के अरुणाचल प्रदेश तक फैला हुआ है। भारत प्राकृतिक विषमताओं का देश है। कहीं पर्वत तो कहीं कल-कल बहती नदियां। प्रकृति का अछूता सौंदर्य और जनजातीय संस्कृति व सभ्यता की धरोहरें, यदि आप मूल रूप में देखना चाहते हैं तो भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की सैर पर निकलें। असम, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड, अरुणाचल और त्रिपुरा कुल सात राज्यों वाला यह क्षेत्र तरह-तरह के जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों के अलावा लोक संस्कृति तथा कलाओं से भरपूर है। सौ से अधिक जनजातियां व उपजातियां इस क्षेत्र में निवास करती हैं।

90 के दशक तक पूर्वोत्तर के इन सीमावर्ती क्षेत्रों तक पहुंचने के साधन नगण्य थे, पर अब हर प्रांत हवाई, सड़क और रेल मार्ग से जुड़ चुका है।

प्राकृतिक संपदा से भरपूर असम

असम भारत के पूर्वोत्तर राज्यों का प्रवेश द्वार है। असम के कुछ हिस्से भूटान और बांग्लादेश की सीमा से लगते हैं। असम की चाय विश्व प्रसिद्ध है। प्राकृतिक संपदा से भरपूर असम भारत का खनिज तेल का सबसे बड़ा उत्पादक है। मां कामाख्या शक्तिपीठ गुवाहाटी में नीलांचल पर्वत पर है। ब्रह्मपुत्र नदी के बीच मयूरद्वीप में प्राचीन शिवमंदिर है। नवग्रह मंदिर, श्रीमंत शंकरदेव कला क्षेत्र, बालाजी मंदिर, साइंस म्यूजियम, वशिष्ठ आश्रम, सराईघाट पुल, मदन कामदेव आदि कई दर्शनीय स्थान हैं।

असम का सुंदर पहाड़ी स्थान हाफलांग है। काजीरंगा नेशनल पार्क में पाया जाने वाला एक सींग का गैंडा असम की धरोहर है। इसके अलावा मानस टाइगर रिजर्व व नमेरी टाइगर रिजर्व अन्य अभ्यारण्य हैं। पक्षियों की कई प्रजातियां तथा दुर्लभ हॉलॉक गिब्बन नामक लंगूर यहां देखे जा सकते हैं। माजुली द्वीप नैसर्गिक सौंदर्य का प्रतीक है। बिहू असम के नृत्यों में प्रमुख है।

त्रिपुरा में उज्जयंता पैलेस

त्रिपुरा भारत का एक राज्य है। अगरतला त्रिपुरा की राजधानी है। इस राज्य के उत्तर, दक्षिण एवं पश्चिम भाग बांग्लादेश की अंतर्राष्ट्रीय सीमा से जुड़ा हुआ है। बंगाली और त्रिपुरी (कोक बोरोक) यहां की मुख्य भाषाएं हैं। त्रिपुरा का उल्लेख महाभारत, पुराणों तथा अशोक के शिलालेखों में मिलता है। आजादी के बाद भारतीय गणराज्य में विलय हुआ। इससे पूर्व यहां राजाओं का शासन था। पूर्व में उदयपुर इसकी राजधानी थी किंतु अठारहवीं सदी में पुराने अगरतला को राजधानी बनाया गया और उन्नीसवीं सदी में नये अगरतला राजा वीर चन्द्र माणिक्य बहादुर देववर्मा ने अपने राज्य का शासन ब्रिटिश भारत की तर्ज पर बनाया। गणमुक्ति परिषद द्वारा चलाए गए आन्दोलन से सन् 1949 में भारतीय गणराज्य में शामिल हुआ।

त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में भी कई पर्यटक स्थल हैं। समृद्ध पुरातात्विक इतिहास से युक्त कई प्रसिद्ध मंदिर जैसे कि जगन्नाथ मंदिर, उमामहेश्वर मंदिर, वेनुवन विहार-बुद्ध मंदिर यहाँ पर देखे जा सकते हैं।

उज्जयंता पैलेस, त्रिपुरा राज्य संग्रहालय, सुकांता अकादमी, लक्ष्मीनारायण मंदिर, मणिपुरी रास लीला, उनकोटी, लक्ष्मी नारायण मंदिर, पुरानी राजबाड़ी, और रवीन्द्र ग्रंथागार क्लाउडेड लेपर्ड राष्ट्रीय उद्यान और राजबाड़ी राष्ट्रीय उद्यान त्रिपुरा के कुछ अन्य आकर्षक स्थल है।

त्रिपुर सुन्दरी-नलवाड़ा ग्राम से 5 किलोमीटर दूर स्थित भव्य प्राचीन त्रिपुर सुन्दरी का मंदिर है, जिसमें सिंह पर सवार भगवती अष्टादश भुजा की मूर्ति स्थित हैं। मूर्ति की भुजाओं में अठारह प्रकार के आयुध हैं। इस मंदिर की गिनती प्राचीन शक्तिपीठों में होती हैं। मंदिर में खण्डित मूर्तियों का संग्रहालय भी बना हुआ है जिनकी शिल्पकला अद्वितीय है। मंदिर में प्रतिदिन दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता है। प्रतिवर्ष नवरात्रों में यहाँ भारी मेला भी लगता है।

सूर्योदय का प्रदेश अरुणाचल

अरुणाचल प्रदेश भारत का वह प्रदेश है जहां सबसे पहले सूर्योदय होता है। राज्य की लगभग 60 प्रतिशत भूमि पर जंगल हैं। अरुणाचल प्रदेश को पहले पूर्वोत्तर सीमांत एजेंसी (नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी- नेफा) के नाम से जाना जाता था। इस राज्य के पश्चिम, उत्तर और पूर्व में क्रमशः भूटान, तिब्बत, चीन, और म्यांमार देशों की अंतर्राष्ट्रीय सीमाएं हैं। अरुणाचल प्रदेश की सीमा नागालैंड और असम से भी मिलती है। इस राज्य में पहाड़ी और अर्द्ध-पहाड़ी क्षेत्र है। इसके पहाड़ों की ढलान असम राज्य के मैदानी भाग की ओर है। 'कामेंग', 'सुबनसिरी', 'सिआंग', 'लोहित' और 'तिरप' आदि नदियां इन्हें अलग-अलग घाटियों में विभाजित कर देती हैं। ऊंचे पर्वत, वन्य प्राणी, दुर्लभ जड़ी-बूटियां व सुंदर दृश्य राज्य की धरोहर हैं। यह एक ऐसा राज्य है जहां एक ही क्षेत्र में तेंदुआ और क्लाउडेड तेंदुआ पाए जाते हैं। यहां के लोगों की प्राकृतिक शक्तियों में गहरी आस्था है। अरुणाचल प्रदेश में लगभग 25 जनजातियां और उनकी उपजातियां निवास करती हैं। साधारणतया मेले व पर्व यहां के जनजीवन का आधार हैं। पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य स्थल तवांग है, जहां बहुत ठंड होती है।

मिजोरम

मिजोरम एक पर्वतीय प्रदेश है। फरवरी, 1987 को यह भारत का 23 वां राज्य बना। 1972 में केंद्रशासित प्रदेश बनने से पहले तक यह असम का एक जिला था। 1972 में पूर्वोत्तर क्षेत्र पुनर्गठन अधिनियम लागू होने पर मिजोरम केंद्रशासित प्रदेश बन गया। भारत सरकार और मिजो नेशनल फ्रंट के बीच 1986 में हुए ऐतिहासिक समझौते के फलस्वरूप 20 फरवरी 1987 को इसे पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया। पूर्व और दक्षिण में म्यांमार और पश्चिम में बंगलादेश के बीच स्थित होने के कारण भारत के पूर्वोत्तर कोने में मिजोरम सामरिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण राज्य है। मिजोरम के 80 प्रतिशत लोग कृषि कार्यों में लगे हैं। कृषि की मुख्य प्रणाली झूम या स्थानांतरित कृषि है।

मिजोरम में प्राकृतिक सौंदर्य बिखरा पड़ा है। समुद्र तल से लगभग 4,000 फुट की ऊंचाई पर स्थित पर्वतीय नगर आइजोल, मिजोरम का एक धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र है। म्यांमार की सीमा के निकट चम्फाई एक सुंदर पर्यटन स्थल है। तामदिल एक प्राकृतिक झील है जहां मनोहारी वन हैं। यह आइजोल से 80 किलोमीटर और पर्यटक स्थल सैतुअल से 10 किलोमीटर की दूरी पर है। वानतांग जलप्रपात मिजोरम में सबसे ऊंचा और अति सुंदर जलप्रपात है।

मेघों का घर मेघालय

मेघालय का अर्थ है बादलों का आलय अर्थात मेघों का घर। मेघालय मूलतः एक पहाड़ी राज्य है। यहाँ खासी, जैंतिया और गारो आदिवासी समुदाय के लोग मुख्यतः रहते हैं। बादलों और वर्षा के कारण यहां की जलवायु में नमी रहती है। इस राज्य के दक्षिण एवं पश्चिम में बंगलादेश की अंतरराष्ट्रीय सीमाएं हैं। मेघालय की राजधानी शिलांग है। इसी शहर के नजदीक विश्व में सबसे अधिक वर्षा वाला क्षेत्र चेरापूंजी यहीं है। मेघालय प्रधानतः कृषि प्रधान

राज्य है। यहाँ की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या मुख्य रूप से खेती पर ही निर्भर है। वार्डस लेक, लेडी हाइदरी पार्क, स्वीट व एलिफेंट फाल्स और गुफा यहां के मुख्य दर्शनीय स्थल हैं। बेंत, बांस हथकरघा तथा हस्तशिल्प की वस्तुओं, फल उत्पाद आदि विश्वस्तरीय चीजें यहां के बाजारों में भरे होते हैं। मेघालय में एक विशेष बात यह है कि सूचना तकनीकी में राज्य तेजी से विकास कर रहा है।

मेघालय में बहुत से ऐसे पर्यटन स्थल हैं, जहां पर प्रकृति अपने भव्य रूप में उपस्थित है। राजधानी शिलांग में भी अनेक सुन्दर स्थल हैं, जिनमें वार्डस लेक, उमियाम झील, लेडी हैदरी उद्यान, पोलो ग्राउंड, मिनी चिड़ियाघर, हाथी झरना, और शिलांग की पर्वत चोटी प्रमुख हैं। शिलांग की पर्वत चोटी से पूरे नगर का दृश्य दिखाई देता है। यहां का गोल्फ कोर्स देश के अच्छे गोल्फर कोर्स मैदानों में से एक है।

पोलो सिखाने वाला मणिपुर

मणिपुर का शाब्दिक अर्थ 'आभूषणों की भूमि' है। भारत की स्वतंत्रता के पहले यह रियासत थी। आजादी के बाद यह भारत का एक केंद्रशासित राज्य बना। यहां की राजधानी इंफाल है। यह संपूर्ण भाग पहाड़ी है। मणिपुर की पूर्वी सीमा म्यांमार से लगती है। इस प्रदेश की जलवायु गरम है तथा वार्षिक वर्षा का औसत 65 इंच है। यहां नागा तथा कूकी जाति की लगभग 60 जनजातियां निवास करती हैं, लेकिन मणिपुरी, बंगला, अंग्रेजी तथा हिंदी मुख्य रूप से बोली जाती है। यहां के लोग संगीत तथा कला में बड़े प्रवीण होते हैं। यहां यद्यपि कई बोलियां बोली जाती हैं। पहाड़ी ढालों पर चाय तथा घाटियों में धान की उपजें प्रमुख हैं। यहीं से होकर एक सड़क बर्मा को जाती है।

1891 में एंग्लो मणिपुरी युद्ध में यह राज्य अंग्रेजों के अधीन आ गया जिन्होंने मणिपुरियों से पोलो सीखी। मणिपुरी लोग वर्ष भर कोई न कोई त्योहार मनाते रहते हैं। निंगोल, ईद, रमजान, चाकाउबा, कुकी-चिन-मिजो त्योहार, क्रिसमस तथा अन्य कई प्रमुख त्योहार हैं। गीत-नृत्य इनकी जीवनशैली है। राज्य की 67 प्रतिशत भूमि पर जंगल है। कई दुर्लभ जड़ी-बूटियां यहां हैं। वन्य प्राणियों में क्लाउडेड लेपर्ड तथा नाचने वाला हिरण यहां के जंगलों की विशेषता है। श्री गोविंदा जी मंदिर, शहीद मीनार, मोइरंग, लोकतक झील वार सीमेट्री आदि अनेक स्थल मणिपुर की घाटियों में देखे जा सकते हैं।

संस्कृति का धनी नागालैंड

प्राकृतिक सौंदर्य और अनूठी संस्कृति का धनी प्रदेश है छोटा सा नागालैंड। नागालैंड की पूर्वी सीमा म्यांमार से जुड़ती है। मुख्य रूप से नागा जाति यहां निवास करती है। यहां की जनसंख्या का लगभग 95 प्रतिशत आबादी इसाईयों की है। नागालैंड अनेक संघर्षों के बाद 1963 में भारत का 16वां राज्य बना। कला और शिल्प में दक्ष, संगीत और नृत्यप्रेमी तथा एक अलग प्रकार की वेशभूषा वाले सुंदर जनजातीय नागा लोगों से मिलना विचित्र अनुभव है। राजधानी कोहिमा सुंदर हिल स्टेशन है। दीमापुर होते हुए तुइनसांग-जुन्हेबोटो और फिर कोहिमा लौटें तो इस सर्कुलर टूर में आप बहुत कुछ देख-समझ सकते हैं। वार सीमेट्री, कैथोलिक कैथेड्रल, म्यूजियम, मोन, मोकोकचुंग, फेक आदि दर्शनीय स्थल हैं। ट्रैकिंग के लिए यहां जाप्फू पीक है। राज्य की 16 मुख्य जनजातियां तथा कई उपजातियां वर्ष भर कई त्योहार मनाती, नाचती और गाती हैं।

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को प्रकृति ने अपनी अनूठी सौंदर्यता प्रदान की है। भारत भ्रमण बिना इन सात बहनों के अधूरा है। जहाँ एक ओर शक्ति पीठ कामाख्या देवी का मंदिर है तो वहीं दूसरी ओर पर्वतों के बीच में नैसर्गिक सौंदर्य से परिपूर्ण वन अभ्यारण, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान। प्राकृतिक रूप से अपनी इन सौन्दर्यताओं के बावजूद रोजगार के अभाव एवं अशिक्षा ने यहाँ के विकास मार्ग को अवरुद्ध कर रखा है। विगत कुछेक सालों में केंद्र सरकार ने पूर्वोत्तर राज्यों के विकास हेतु कदम भी उठाएं हैं जो इन राज्यों को देश की प्रगति में और अधिक सहयोग देने हेतु प्रोत्साहित करेगा।

राजभाषा अधिकारी
प्र.का., राजभाषा विभाग

दिल्ली बैंक नराकास प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करते हुए स्टाफ सदस्य

प्रथम
श्री प्रदीप कुमार राव
प्र.का. सतर्कता विभाग
(अहिंदी भाषियों के लिए वाणी ज्ञान प्रतियोगिता)

प्रथम
सुश्री नेहा कुमारी
प्र.का. वित्तीय समावेशन विभाग (चित्र आधारित लघु कथा लेखन प्रतियोगिता)

तृतीय
श्री राजेश कुमार,
प्र.का. विधि एवं वसूली विभाग (हिंदी भाषा कविता लेखन प्रतियोगिता)

तृतीय
श्री ताराचन्द,
प्र.का. स्थापना कक्ष
(सामान्य ज्ञान क्विज प्रतियोगिता)

प्रोत्साहन
सुश्री शिवानी,
प्र.का. भविष्य निधि विभाग
(समाचार वाचन एवं काव्यपाठ प्रतियोगिता)

प्रोत्साहन
सुश्री अनुभा कटियार
प्र.का. योजना एवं विकास विभाग (हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता)

प्रोत्साहन
सुश्री सीमा,
आंचलिक कार्यालय, दिल्ली I
(अनुवाद प्रतियोगिता)

प्रोत्साहन
श्री राजीव रंजन
प्र.का. ऋण निगरानी विभाग (सामान्य ज्ञान क्विज प्रतियोगिता)

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों ने भी पुरस्कार प्राप्त किए :

तृतीय पुरस्कार
सुश्री शाइना
प्र.का. जोखिम प्रबंधन विभाग
(चित्र कहानी लेखन प्रतियोगिता)

प्रोत्साहन पुरस्कार
श्री विपिन कुमार
आंचलिक कार्यालय, दिल्ली-II
(तकनीकी बैंकिंग और हिंदी निबंध, यूनिकोड में)

प्रोत्साहन पुरस्कार
सुश्री प्रेरणा
प्र. का. अग्रिम विभाग
(गीत गायन प्रतियोगिता)

प्रोत्साहन पुरस्कार
श्री रोहित वर्मा
प्र. का. मानव संसाधन विकास विभाग
(स्मृति ज्ञान प्रतियोगिता)

दिल्ली बैंक राजभाषा शील्डें

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा बैंक की हिंदी पत्रिका "राजभाषा अंकुर" को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव प्रो. बिपिन बिहारी जी के कर कमलों से शील्ड प्राप्त करते हुए महाप्रबंधक, श्री दीन दयाल शर्मा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली, एवं प्रबंधक, डॉ. नीरू पाठक।

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा बैंक को हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव प्रो. बिपिन बिहारी जी के कर कमलों से शील्ड प्राप्त करते हुए महाप्रबंधक, श्री दीन दयाल शर्मा तथा सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली।

नराकास पत्रिका 'बैंक भारती' में प्रकाशित श्रेष्ठ रचनाओं पर विशेष पुरस्कार

प्रदीप कुमार रॉय

प्रथम पुरस्कार (कहानी)

राजिंदर सिंह बेवली

द्वितीय पुरस्कार (लेख)

नेहा कुमारी

द्वितीय पुरस्कार (कविता)

जस्सड़ां वाली गड्डी

निखिल कुमार शर्मा

1947 में भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से विस्थापित होकर भारत आए लोग एक रेलगाड़ी का नाम बहुत लेते हैं- "जस्सड़ां वाली गड्डी।" इस गाड़ी में सवार लगभग सभी लोगों को मार डाला गया था। जस्सड़ां वाली गाड़ी को Train from Pakistan कह सकते हैं। जिस गाड़ी के बारे में ध्यान देवी कहती हैं कि "वे व उनका परिवार उसी गाड़ी में आए थे"। जब यह घटना घटी तब वे लगभग सोलह वर्ष की थीं। वे स्यालकोट के मोहल्ला प्रकाशनगर, गाँव नुट्टर की रहने वाली थीं। पिता का नाम लाधी राम और माता का नाम गौरी देई था।

भारत विभाजन के समय जब यह परिवार स्यालकोट से चला तो पहले स्यालकोट छावनी में नौ दिन रुका। इस परिवार में ध्यान देवी के माता-पिता के अतिरिक्त देसराज (भाई), ज्ञान देवी (बहन), आज्ञावंती (भाभी), प्रकाश (भाई), महेश कुमार (भाई, आयु 3 वर्ष), एक नवजात बहन कांता (आयु 20 दिन) और दादी थीं। स्यालकोट छावनी से गाड़ी पकड़ी। गाड़ी ठसाठस भरी हुई थी। दरवाजों-खिड़कियों और छतों पर भी लोग लटके हुए थे। वहाँ के अच्छे इंसानों ने सभी यात्रियों को रास्ते के लिए संतरे दे कर विदा किया। ध्यान देवी ने भी दो-तीन संतरे अपने थैले में डाल लिए। जस्सड़ स्टेशन नारोवाल और डेरा बाबा नानक के बीच पड़ता था और डेरा बाबा नानक से पहले रावी नदी पर एक पुल था जिसे पैदल पार करना था। जस्सड़ में मुसलमानों का एक समूह आया और आउटर सिग्नल पर गाड़ी रोक दी गई और उसे चलने नहीं दिया। ध्यान देवी बताती हैं कि यह समूह गाड़ी में सवार एक महिला शीलू को भारत नहीं आने दे रहा था क्योंकि शादी से पूर्व उसका एक मुसलमान लड़के से प्रेम हो चुका था। शीलू के सिख पति और अन्य संबंधियों द्वारा और जबरदस्ती का विरोध करना मारकाट की वजह बन गया। हत्याओं का दौर शुरू हुआ और लूटपाट भी मची। इंसानियत कोने में दुबकी रही। धर्म-मजहब हमेशा की तरह अप्रभावी हो गए। पुल आने से पहले ही लोगों को मारने का सिलसिला शुरू कर दिया गया। मारने की एक रणनीति बनाई गई। युवाओं को काट कर मार गया, बूढ़ों और बच्चों को दरिया में फेंका गया। युवतियों को बंदी बना लिया गया। उनकी अस्मत छीन ली गई। ध्यान देवी जब भी उस वातावरण को याद करती हैं....भगदड़ ही भगदड़.... उनका दिल कांप जाता है।

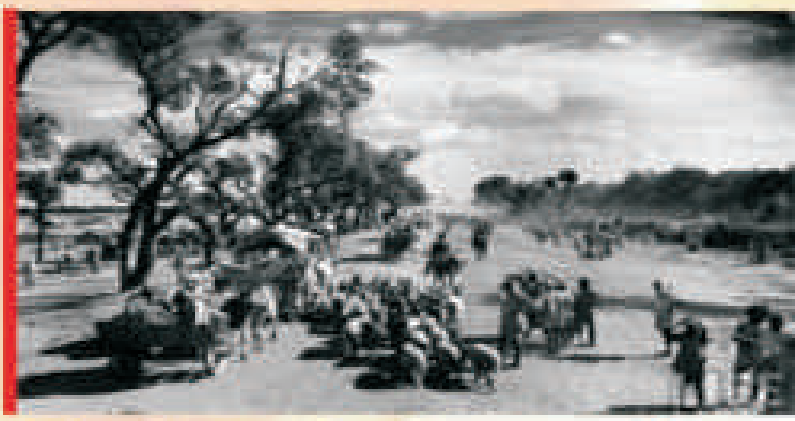

जैसे-तैसे कुछ लोग बच गए और वे पुल भी पार कर गए। ध्यान देवी की दादी पुल पार करके नहीं आई। शायद मार डाली गई। अपनाई गई रणनीति के अनुसार युवा भाई प्रकाश को काट कर दरिया में फेंका गया। तीन साल के भाई महेश को जीवित दरिया में फेंका गया। माँ गौरी के मुँह और सिर पर चोट आई जिससे वे वहीं पर गिर गईं। लेकिन वह समय पीछे मुड़ कर मदद करने का नहीं था। जो पीछे छूट गया उसके मरा होने या जिंदा होने की सुध लेने की सुध किसी को नहीं थी। केवल एक दिशा का पता था कि उधर (भारत) जाना है।

पुल पार करके सुरक्षित जगह पहुँचे लोगों को अब कुछ समय इंतजार करने का मिला। वे पीछे देखने लगे कि शायद कोई बचा हुआ संबंधी पुल पर आता दिख जाए। जो जिंदा बच गए थे उन लोगों को अपनी आने वाली समस्याएँ दिखने और सताने लगीं।

16 वर्षीय ध्यान देवी ने अपनी 20 दिन की बहन को उठाया हुआ था और बीच-बीच में उसे संतरे का रस दे कर चुप करती रही। उसकी माँ के जिंदा होने का पता नहीं था। पिता की चिंता थी कि इतनी छोटी बच्ची को कहाँ लिए फिरेंगे। कौन पालेगा नन्हें शिशु को ध्यान देवी से ले कर दरिया में फेंकने की नाकाम कोशिश कई बार की गई। परंतु ध्यान देवी सब समझती थी। हर बार वह बहन को किसी बहाने वापस ले लेती और संतरे का रस देती रही। शाम होते-होते पुल से कुछ लोग आते दिखे। ध्यान देवी को अपनी माँ पागल अवस्था में आती दिखाई दी। फिर दरिया में फेंका गया छोटा भाई महेश भी आता दिखा। तीन वर्षीय महेश अपने गाँव की दो अन्य बच्चियों को अपनी छोटी-छोटी उंगलियाँ थमा कर साथ ला रहा था। पटना के तौर पर इतना काफी था। लेकिन नहीं....

शीनू कौन थी जिसका निजी जीवन हजारों लोगों के मारे जाने का बहाना बन गया। शीनू इनके घर से तीसरे घर में रहती थी। शीनू बहुत सुंदर थी। उसकी पहली माँ का नाम भागवंती और दूसरी माँ का नाम सुमित्रा था। पिता संतराम बढ़ई थे। शीनू एक मुसलमान लड़के से प्रेम करती थी। उसके माता-पिता किसी मुसलमान से उसकी शादी के खिलाफ थे। उसकी शादी एक सिख परिवार में कर दी गई। वह सारा सिख परिवार, शीनू सहित, जम्मू वाली गाड़ी अटेंड में मारा गया।

- राजभाषा प्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, गुरदासपुर

ज़रा सोचिए......?

आज्ञाकार सिंह

उस दिन ऑटो रिक्शा से मैं अपने दफ्तर जा रहा था। बहुत ही शीतल हवा चल रही थी और एक प्रसन्नता का वातावरण था। अचानक ऑटो धीमा हो गया। मैंने देखा कि एक कार ने, पार्किंग में से बैक किया और उसने आगे चल रही कार को हल्का सा टच कर दिया। जिस कार को रगड़ लगी थी उसमें से एक युवा महिला निकली, रगड़ को देखा और दूसरी कार के मालिक को बुरा भला कहने लगी। मैंने देखा कि रगड़ इतनी कम थी कि नजदीक जाने पर ही कुछ दिखाई देती थी। इतने में दूसरी कार से भी कार चालक निकल आया। महिला का चेहरा तमतमाया हुआ था। इससे पहले कि कार चालक कुछ कहता महिला ने उसे बहुत ही गंदी गालियाँ निकालनी शुरू कर दीं, जो प्रायः संभ्रांत महिलाओं को बिलकुल भी शोभा नहीं देता। कार चालक माफी की मुद्रा में था, लेकिन महिला का गुस्सा सिर्फ गालियों से शांत नहीं हुआ। उसने सामने पड़ा एक पत्थर उठाया और दूसरी कार की हैड लाइट तोड़ दी। इतना गुस्सा देखते ही कार चालक की गाड़ी से एक 18-20 साल की लड़की निकली और उस महिला को घुमाकर एक थप्पड़ जड़ दिया।

इससे आगे क्या हुआ....... ! मित्रो, आप खुद ही समझ सकते हैं। मैं तो सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ कि मैंने महिला की कार पर लगी उस रगड़ को देखा था और यकीन मानिए वहां कुछ भी ऐसा नहीं था जिससे बात इतनी बढ़ाई जाती। उन सज्जन से गलती जरूर हुई थी और वे उससे इनकार भी नहीं कर रहे थे बल्कि पैसा देने को भी तैयार थे। अब सोचिए ना, यदि कार सड़क पर चलेगी तो वैसी तो नहीं रहेगी ना जैसी शो रूम में खड़ी कारें होती हैं।

अधीरता कहीं न कहीं हमारे मानसिक संतुलन को खराब करती है। कहीं वह महिला स्वयं ही तो कार बैक होती देखने के बावजूद आगे निकलने की कोशिश तो नहीं कर रही थी। क्या वह लेट हो रही थी या किसी और का गुस्सा यहाँ निकल गया।

धैर्य से, ठंडे दिमाग से कई समाधान यूं ही हो जाते हैं। कहीं हम और आप भी तो इतनी अधीरता पाले हुए नहीं बैठे हैं?????............ ज़रा सोचिए....

प्रबंधक, प्र. का. सामान्य प्रशासन विभाग

फरीदकोट में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन

फरीदकोट में सरकारी कामकाज हिंदी व क्षेत्रीय भाषा पंजाबी में करने के उद्देश्य से गृह मंत्रालय की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन पंजाब एण्ड सिंध बैंक द्वारा किया गया। 10 मार्च 2017 को बुलाई गई पहली बैठक में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री प्रमोद कुमार शर्मा जी ने विशेष मार्गदर्शक के रूप में उपस्थित होकर सभी का मनोबल बढ़ाया। बैठक की अध्यक्षता आंचलिक प्रबंधक श्री अमरजीत सिंह गुजराल द्वारा की गई और समिति सचिव बने, राजभाषा अधिकारी श्री सुधीर कुमार। प्रधान कार्यालय के सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेदी ने भी सभी सदस्यों का मार्गदर्शन किया और उप समितियों का गठन करवाया। प्रस्तुत हैं प्रथम बैठक की कुछ झलकियां :-

दीप प्रज्ज्वलित करते श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय- दिल्ली -1।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) का स्वागत करते श्री अमरजीत सिंह गुजराल, नराकास अध्यक्ष

समीक्षा बैठक में सदस्य कार्यालयों के उच्चाधिकारियों का मार्गदर्शन करते श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन)

अध्यक्षीय संबोधन देते श्री अमरजीत सिंह गुजराल, आंचलिक प्रबंधक व नराकास अध्यक्ष

श्री सुधीर कुमार नराकास सचिव, प्रतिनिधियों को उपसमितियों का महत्व समझाते हुए।

नराकास की ओर से धन्यवाद ज्ञापित करतीं केंद्रीय विद्यालय फरीदकोट की प्रधानाचार्या डॉ. हरजिंदर कौर।

सिरोइ लिली

सुश्री चारमिला खईजा

विभिन्न सीमावर्ती क्षेत्रों की विभिन्न विशेषताएं रहती हैं। म्यांमार की सीमा से लगते मणिपुर के ऊँचे पहाड़ों पर अपनी सुंदरता के कारण देशी-विदेशी सैलानियों के आकर्षण का केंद्र है.... एक फूल.... सिरोइ लिली

सिरोइ लिली भारत के सीमावर्ती क्षेत्र में पाया जाने वाला एक विशेष प्रकार का फूल है जो केवल मणिपुर में ही पाया जाता है। सिरोइ लिली नाम सुनते ही हमारे मस्तिष्क में एक विशिष्ट प्रकार की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। यह फूल मणिपुर राज्य के उखरुल नामक जिले में पाया जाता है। ये जिला मणिपुर की राजधानी इंफाल से लगभग 83 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। अन्य जिलों की तुलना में उखरुल पहाड़ों से घिरा हुआ जिला है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मणिपुर को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला तथा इसके साथ ही 21 मार्च 1989 को सिरोइ लिली को मणिपुर राज्य का पुष्प घोषित कर दिया गया। सिरोइ लिली का रंग नीला तथा गुलाबी होता है। सिरोइ फूल का नाम उसके उद्गम स्थान से निर्मित हुआ है। यह फूल पहाड़ों की चोटियों पर ही खिलता है। सिरोइ नामक गाँव पर खिलने के कारण इसका नाम 'सिरोइ लिली' पड़ा। स्थानीय निवासी इसे सिरोही के नाम से भी संबोधित करते हैं।

सिरोइ लिली वर्ष में केवल मई-जून महीने में खिलता है। इस दौरान देश-विदेश से अनेक पर्यटक विशेष रूप से इस फूल को देखने आते हैं। सिरोइ लिली फूल की ऊँचाई 1 से 3 फीट तक की होती है। इसके पौधे में 1 से लेकर लगभग 7 फूल खिलते हैं। कई लोगों द्वारा तथा वैज्ञानिकों द्वारा भी इस फूल को किसी अन्य स्थान पर उगाने या लगाने की कोशिश की गई परंतु वे सफल नहीं हुए। वैज्ञानिकों द्वारा सिरोइ लिली फूल को प्रायः लुप्त प्रजाति घोषित किया गया है, इसलिए इस फूल को तोड़ने की भी मनाही है। अतः सिरोइ लिली फूल के संरक्षण का दायित्व मात्र उखरुल वासियों का ही नहीं वरन मणिपुर के सभी निवासियों का है। इस प्रकार हमें अपनी संपदा को सुरक्षित करने का सदैव प्रयास करते रहना चाहिए।

प्रबंधक, लाइफाम शाखा

कोहिमा ईपिटफ

सुश्री चिंगहोयेबंम टॉंग सिंह

कोहिमा शहर भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में से एक क्षेत्र है, जो नागालैंड की राजधानी भी है। इस शहर ने अपने आप में प्राकृतिक सुंदरताओं को संजो कर रखा हुआ है। इसी शहर के मध्य में कोहिमा ईपिटफ (युद्ध समाधि-स्थल) है, जो कि हमारे बैंक की शाखा कोहिमा के पास स्थित है।

कोहिमा ईपिटफ, मित्र राष्ट्र-संघ के द्वितीय ब्रिटिश विभाजन के उन 10,000 सैनिकों को समर्पित किया गया है, जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानी सेनाओं को रोकने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। कोहिमा का युद्ध तीन महीनों तक लड़ा गया (04 अप्रैल से 22 जून 1944 तक)। इस युद्ध के दौरान एक छोटे से सैनिक दस्ते ने पूरी जापानी सेना को भारत में प्रवेश करने से कोहिमा शहर में रोक कर रखा था।

कोहिमा ईपिटफ इंफाल-दीमापुर रोड (राष्ट्रीय राजमार्ग 39) पर स्थित है, जो कि भारत-बर्मा की सीमा से कुछ ही दूरी पर है। कोहिमा ईपिटफ में विश्व भर से लोग उन सैनिकों को अपनी श्रद्धांजलि देने आते हैं, जिन्होंने विश्व युद्ध के दौरान अपने प्राणों की आहुति दी थी।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापानियों ने नागालैंड पर भयंकर हमला किया था जिसमें बहुत बड़ी संख्या में सैनिक और अधिकारी मारे गए थे। हमले में मारे गए इन सभी सैनिकों को गैरीसन हिल पर दफनाया गया था। बाद में उनकी स्मृति में 1421 समाधियों का निर्माण किया गया।

कोहिमा ईपिटफ में दो बड़े स्मारक क्रोस हैं, एक ऊपर की ओर है तो दूसरा नीचे की ओर है। ऊपर बने स्मारक पर 917 हिंदू एवं सिक्ख सैनिकों का अंतिम संस्कार किया गया था तथा लिखा गया था कि "यह डिप्टी कमिश्नर के टेनिस कोर्ट के चारों तरफ ये बहादुर सैनिक हैं, जिन्होंने सन् 1944 में जापानी सेनाओं को भारत में आने से रोका" तथा नीचे वाला हिस्सा जो कि द्वितीय ब्रिटिश विभाजन को समर्पित है, वहाँ लिखा गया था "जब तुम घर जाना तो उन्हें हमारे बारे में बताना और कहना कि तुम्हारे आने वाले कल के लिए हमने अपना आज कुर्बान कर दिया", जो कि इस स्मारक में प्रवेश करते ही पर्यटकों को दिख जाएगी। ये पंक्तियाँ कोहिमा के शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि के रूप में लिखी गई हैं।

गैरीसन हिल जहाँ कोहिमा ईपिटफ स्थित है, वहाँ कभी डिप्टी कमिश्नर का टेनिस कोर्ट हुआ करता था, फिर यह जंग का मैदान बन गया और आज यह 1420 कब्रों का घर है। कभी-कभी इन कब्रों पर लिखे नामों को देख कर ऐसा लगता है कि देखने वालों को कैसा अजीब सा अनुभव होता होगा यहाँ आकर, कि अनजान तथा विदेश में जाकर वहाँ की धरती को बचाते हुए अपने प्राणों की आहुति देना तथा कैसा लगता होगा जिनके प्रियजनों को, कि उनके प्यारे मीलों दूर किसी विदेशी धरती में समाए हुए हैं।

कोहिमा युद्ध स्मारक की देख-रेख, राष्ट्रमंडल युद्ध स्मारक आयोग द्वारा की जाती है। पूरी दुनिया से हजारों पर्यटक खासकर ब्रिटेन और कनाडा से आने वाले लोग इस स्थल को तीर्थ स्थल के रूप में सम्मान देते हैं और दर्शन करने आते हैं। कोहिमा ईपिटफ को देखने का समय गर्मियों का समय होता है, जब यहाँ का मौसम सुहाना होता है। सर्दियों में यहाँ का तापमान शून्य से नीचे गिर जाता है। बरसात के दिनों में कोहिमा में बहुत भारी बरसात होती है, जो की सैर सपाटे का मजा किरकिरा कर सकती है। यहाँ से कोहिमा शहर का पूरा नजारा मिलता है। कोहिमा ईपिटफ बहुत ही शांत जगह है, जिसके चारों ओर हल्की घास तथा गुलाब और मौसमी फूल लगे हैं।

तो अगली बार जब एल.एफ.सी तथा फैमिली ट्रिप पर जाना हो, तो कोहिमा ईपिटफ जरूर जाइएगा। जब आप उन शिलालेखों पर लिखे नामों को पढ़ेंगे, उन बहादुर सैनिकों के जज्बे को महसूस करेंगे तथा उन गुमनाम वीरों की कहानियाँ सुनेंगे तो मेरा दावा है कि इतिहास के चंद टुकड़े आपके हृदय को जरूर छुएंगे।

प्रबंधक, शाखा कोहिमा

हिंदी पत्रिका राजभाषा अंकुर का विमोचन

पत्रिका के दिसंबर 2016 अंक का विमोचन संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण जटिया जी एवं संयोजक श्री हुक्मदेव नारायण यादव जी के कर-कमलों द्वारा किया गया। चित्र में संसदीय समिति के माननीय सदस्यों एवं अधिकारियों के साथ बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दरवीर सिंह(आई.ए.एस.), कार्यकारी निदेशक श्री एम. के. जैन तथा अन्य उच्चाधिकारीगण दिखाई दे रहे हैं।

राजभाषा पोर्टल का शुभारंभ

संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण जटिया जी बैंक के राजभाषा पोर्टल का शुभारंभ करते हुए। चित्र में बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दरवीर सिंह(आई.ए.एस.), कार्यकारी निदेशक श्री एम.के. जैन, महाप्रबंधक श्री दीन दयाल शर्मा, महाप्रबंधक श्री दीपक मैनी, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह केवली, प्रबंधक डॉ. नीरू पाठक तथा राजभाषा अधिकारी श्री रूप कुमार भी दिखाई दे रहे हैं।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमि

समिति के संयोजक श्री हुक्मदेव नारायण यादव जी का स्वागत करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दरबीर सिंह(आई.ए.एस)

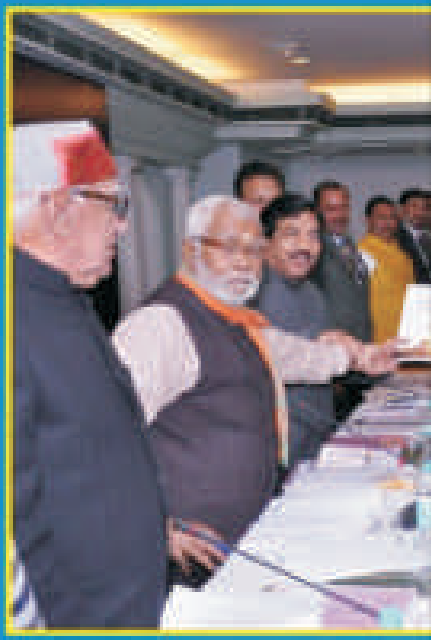

महामहिम राष्ट्रपति जी के आदेश, बैंक
डा. सत्यनारायण जटिया, संयोजक श्री

ति द्वारा बैंक के प्रधान कार्यालय का निरीक्षण

अधिकारियों को सौंपते हुए समिति के उपाध्यक्ष हुक्म देव नारायण यादव व समिति के सदस्यगण।

समिति के उपाध्यक्ष डा. सत्य नारायण जटिया जी का स्वागत करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दरबीर सिंह(आई.ए.एस)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

प्रधान कार्यालय द्वारा 8 मार्च 2017 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दरबीर सिंह (आई.ए.एस) द्वारा की गई। समारोह में कार्यकारी निदेशक श्री मुकेश कुमार जैन, कार्यकारी निदेशक श्री फरीद अहमद तथा अन्य कार्यपालकों ने विशेष रूप से अपना सान्निध्य प्रदान किया। इस अवसर पर महिला स्टाफ सदस्यों द्वारा एक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया तथा महिला सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

प्रस्तुत हैं कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ.....।

खासी जनजाति

मनोज कुमार

मेघालय भारत के उत्तर पूर्व में स्थित एक राज्य है। मेघालय का क्षेत्रफल लगभग 22,429 वर्ग किलोमीटर है। यहाँ की जनसंख्या 2,175,000 है। इसके उत्तर में असम, जो कि ब्रह्मपुत्र नदी द्वारा विभाजित होता है और दक्षिण में बांग्लादेश स्थित है। मेघालय की राजधानी खूबसूरत शहर शिलांग है। मेघालय, पहले असम राज्य का हिस्सा था, जिसे 21 जनवरी 1972 को विभाजित कर नया राज्य बनाया गया। जनजातीय आबादी कुल जनसंख्या का लगभग 85 प्रतिशत है। यहाँ की लगभग 50 प्रतिशत आबादी खासी जनजाति की है, जबकि दूसरे स्थान पर गारो जनजाति है, जिनकी जनसंख्या राज्य की जनसंख्या का लगभग एक तिहाई है। इसके अतिरिक्त जयंतिया तथा हजोंग जातियाँ भी हैं। लगभग 15 प्रतिशत आबादी में बंगाली तथा शेष शामिल हैं।

खासी (जिसे खासिया तथा खासा भी कहा जाता है) एक जनजाति है जो भारत के मेघालय, असम तथा बांग्लादेश के कुछ क्षेत्रों में निवास करती है। ये खासी तथा जयंतिया की पहाड़ियों में रहनेवाली एक मातृकुलमूलक जनजाति है। स्त्री तथा पुरुष दोनों सिर पर बड़े बड़े बाल रखते हैं किंतु निर्धन लोग सिर मुँड़वा लेते हैं।

खासियों की विशेषता उनका मातृमूलक परिवार है। विवाह होने पर पति ससुराल में रहता है। परंपरानुसार पुरुष की विवाहपूर्व कमाई पर मातृपरिवार का और विवाहोत्तर कमाई पर पत्नीपरिवार का अधिकार होता है। वंशावली नारी से चलती है और संपत्ति की स्वामिनी भी वही है। संयुक्त परिवार की संरक्षिका कनिष्ठ पुत्री होती है। अब कुछ खासिए शिलांग आदि में संयुक्त परिवार से अलग व्यापार, नौकरी आदि कृषितर वृत्ति भी करने लगे हैं। परंपरागत पारिवारिक जायदाद बेचना निषिद्ध है। विवाह के लिए कोई विशेष रस्म नहीं है। लड़की और माता पिता की सम्मति होने पर युवक ससुराल में आना जाना शुरू कर देता है और संतान होते ही वह स्थायी रूप से वहीं रहने लगता है। संबंधविच्छेद भी अक्सर सरलतापूर्वक होते रहते हैं। संतान पर पिता का कोई अधिकार नहीं होता।

खासियों में ईश्वर की कल्पना होते हुए भी केवल उपदेवताओं की पूजा होती है। कुछ खासियों ने काली और महादेव जैसे हिंदू देवदेवियों को अपना लिया है। रोग होने पर ये लोग औषधि का उपयोग न कर संबंधित देवता को बलि द्वारा प्रसन्न करते हैं। शव का दाह किया जाता है और मृत्यु के तुरंत बाद काग की और कभी कभी बैल या गाय की भी बलि दी जाती है। मृत्यु के पश्चात महीनों तक कर्मकांड का सिलसिला चलता रहता है और

अंत में अवशिष्ट अस्थियों को परिवार-समाधिशाला में रखते समय बैल की बलि दी जाती है और इस अवसर पर तीन चार दिन तक नृत्यगान तथा दावतें होती हैं। खासियों का विश्वास है कि जिनका अंत्येष्टि संस्कार विधिवत् संपन्न होता है उनकी आत्माएं ईश्वर के उद्यान में निवास करती हैं, अन्यथा पशु-पक्षी बनकर पृथ्वी पर घूमती हैं।

खासिया खेतिहर हैं और धान के अतिरिक्त नारंगी, पान तथा सुपारी का उत्पादन करते हैं। खासिया अनेकानेक शाखाओं में विभक्त हैं। खासी, सिंतेंग, वार और लिंगम, उनकी चार मुख्य शाखाएं हैं। इनके बीच परस्पर विवाह संबंध होता है। केवल अपने कुल या कबीले में विवाहसंबंध निषिद्ध होता है।

प्रत्येक कबीले में राजवंश, पुरोहित, मंत्री तथा जन सामान्य ये चार श्रेणियां हैं। किंतु वार शाखा में विशिष्ट सामाजिक श्रेणियां नहीं हैं। कबीले के सरदार या मंत्री संबंधित विशिष्ट श्रेणी के सदस्य ही बन सकते हैं। एक कबीले में स्त्री ही सर्वोच्च शासक होती है और वह अपने पुत्र अथवा भांजे को लिंगदोह (मुख्य मंत्री) बनाकर उसके द्वारा शासन करती है। शिलांग खासियों के क्षेत्र में स्थित है। फलतः खासियों पर बाहरी संस्कृति तथा आधुनिक सभ्यता का बराबर प्रभाव पड़ रहा है।

- अधिकारी, अं.का. गुवाहाटी

स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय का उद्घाटन

6 फरवरी 2017 को स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय, रोहिणी का उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अनिंदरबीर सिंह (आई ए एस) एवं कार्यकारी निदेशक श्री मुकेश कुमार जैन। इस अवसर पर प्रधान कार्यालय के सभी कार्यपालक और कतिपय आंचलिक प्रबंधक भी उपस्थित थे। दाईं ओर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय से आशीर्वाद प्राप्त करते प्रधानाचार्य श्री राजेंद्र कुमार।

हमें इन पर गर्व है......

उन्नाव जिले की नेतुवा शाखा की अधिकारी सुश्री आयुषी जौहरी ने बैंक ऑफ महाराष्ट्र द्वारा आयोजित अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता में 'क' श्रेणी के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार व शील्ड प्राप्त की। शाबाश आयुषी, यूं ही आगे बढ़ती रहो।

विशिष्ट खुदरा आस्ति शाखा-I, नारायणा के मुख्य प्रबंधक श्री संकट लाल सोनी की सुपुत्री सुश्री हर्षा सोनी ने इंटीग्रेटेड प्रोफेशनल कॉम्पिटेंस कोर्स (आईपीसीसी) में अखिल भारतीय स्तर पर 37वीं रैंकिंग हासिल की है। पीएसबी परिवार की ओर से हर्षा को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी विशेष संगोष्ठी

बैंक के सभी राजभाषा अधिकारियों के लिए प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा 'राजभाषा कार्यान्वयन में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व' विषय पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक श्री केवल कृष्ण जी ने सहभागियों का मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर आंचलिक प्रबंधक श्री जी. एस. सरना तथा सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह केवली भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

संगोष्ठी : बैंक की लाभप्रदता बढ़ाने में भारतीय भाषाओं का महत्व

प्र.का. द्वारा बैंक की लाभप्रदता बढ़ाने में प्रभावी ग्राहक सेवा और भारतीय भाषाएँ विषय पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता आंचलिक प्रबंधक, श्री जी. एस. सरना ने की। संगोष्ठी में श्रीमती इंदरपाल कौर, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), श्री देवेन्द्र कुमार, राजभाषा प्रबंधक तथा श्री दीपक साव राजभाषा अधिकारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सदा-ए-सरहद

हरप्रीत कौर

भारत के सीमावर्ती क्षेत्र अर्थात् भारत की सीमा के साथ सटे हुए या यूं कहिए कि सीमा के साथ बसे हुए क्षेत्र। इस विषय पर कुछ लिखना मुश्किल तो है लेकिन रोमांचक भी है। ऐसा ही एक सीमावर्ती क्षेत्र है पंजाब का "अटारी"। यह नाम सुनते ही किसी के भी दिलो-दिमाग पर इतिहास की पुरानी तस्वीरें एक चलचित्र की भांति चलने लगेंगी। तो आइए, आज हम अटारी तथा इसके आस-पास के क्षेत्रों के बारे में कुछ जानकारी सांझा करते हैं।

अटारी, जो कि भारत-पाक सीमा से कुछ ही दूरी (3 किमी) पर स्थित है, भारत के पंजाब राज्य के ज़िला अमृतसर का एक गाँव है। यह स्थान गुरुओं की पवित्र नगरी श्री अमृतसर साहिब से 25 किमी पश्चिम की ओर स्थित है तथा भारत की राजधानी दिल्ली को लाहौर पाकिस्तान से जोड़ने वाली रेलवे लाइन के रूट का अंतिम भारतीय रेलवे स्टेशन है। इस रेलवे स्टेशन से समझौता एक्सप्रेस नाम की रेलगाड़ी भारत के अटारी से पाकिस्तान के लाहौर तक जाती है। समझौता एक्सप्रेस को आमतौर पर फ्रैंड्स एक्सप्रेस भी कहा जाता है। यह रेल भारत के दिल्ली और अटारी के बीच तथा पाकिस्तान के लाहौर के बीच चलती है।

अटारी स्टेशन भारत पाक युद्ध के चलते सितंबर 1965 से 21.07.1976 तक बंद रहा। दिसंबर 1992 में बाबरी मस्जिद पर हमले के कारण भी यहाँ की ट्रेन सुविधा कुछ समय के लिए बंद कर दी गई थी और अब 15.01.2004 से यह ट्रेन लगातार बिना किसी रुकावट के चल रही है और प्रतिदिन लगभग 1500 से भी अधिक व्यक्ति इस ट्रेन के ज़रिए आते जाते हैं।

समझौता एक्सप्रेस

अटारी तथा

लाहौर रेलवे स्टेशन

दिल्ली से लाहौर जाने के लिए एक अन्य यातायात का साधन है बस, जिसे सदा-ए-सरहद के नाम से जाना जाता है। इस बस के ऑपरेटर भारत में दिल्ली परिवहन निगम (DTC) तथा पाकिस्तान में पाकिस्तान पर्यटन विकास निगम (PTDC) हैं। इस बस का ट्रायल 8 से 14 जनवरी 1999 के दौरान दोनों देशों के सरकारी अधिकारियों के साथ किया गया। इसकी प्रथम यात्रा के दौरे का शुभारंभ करते हुए माननीय पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने 19 फरवरी 1999 को लाहौर में आयोजित शिखर सम्मेलन में भाग लिया और श्री परवेज़ मुशर्रफ द्वारा वाघा बॉर्डर पर उनका स्वागत किया गया। दोनों देशों के बीच इतने मतभेद होते हुए भी यह बस दोनों देशों में एक-दूसरे के प्रति प्रेम की प्रतीक है।

देश के दोनों तरफ ही कड़े सुरक्षा प्रबंधों के बीच से होते हुए यह बस दिल्ली से लाहौर तथा लाहौर से दिल्ली तक का सफर बिना किसी

रुकावट के तय करती है। सफर के यात्रियों के पास उनका वैध पासपोर्ट, वीज़ा तथा बस की टिकट आदि होना अति आवश्यक है। दिल्ली से आते हुए यह बस कुरुक्षेत्र, सरहिंद, करतारपुर, अमृतसर तथा वाघा में खान-पान के लिए रुकती है और दिल्ली से लाहौर का 530 किमी का सफर केवल 8 घण्टों में तय करती है।

"अटारी" गांव शाम सिंह अटारीवाला का पैतृक गांव है। शाम सिंह अटारीवाला महाराजा रणजीत सिंह की सेना के मिसलों में से एक रहे हैं। आइये! अब आपको अटारी गाँव ले चलते हैं और वहां के रहन-सहन, जीवनशैली, जनसंख्या आदि पर नज़र डालते हैं। यहां की आम बोलचाल की भाषा पंजाबी ही है और जीवनशैली अधिकतर ग्रामीण प्रकार की है। जहां तक यहां की जनसंख्या का प्रश्न है तो अटारी में लगभग 1670 परिवार ही रहते हैं तथा इनमें 4810 पुरुष एवं 4111 स्त्रियां हैं (जनसंख्या गणना 2011 के अनुसार)। भारतीय संविधान तथा पंचायती राज एक्ट के अनुसार यहां गाँव का मुखिया सरपंच ही होता है। यहां के लोगों की आय का प्रमुख स्रोत खेती-बाड़ी ही है।

इसके निकट ही पर्यटकों के लिए आकर्षण का एक और प्रमुख केंद्र वाघा बॉर्डर भी महत्वपूर्ण है। भारत-पाक सीमा पर यह संयुक्त जाँच चौकी (जे.सी.पी.) है जो शाम होते होते एकदम जीवंत हो उठती है। इसका प्रमुख कारण है यहां होने वाला ध्वजारोहण समारोह, जिसे देखने के लिए शाम से पहले ही यहां पर्यटकों का हुजूम जुटने लगता है। शहर से करीब 32 किमी. दूर स्थित यह चौकी शाम के समय एक समारोह स्थल में तब्दील हो जाती है। सीमा पर लोहे के दो बड़े गेट लगे हैं। तिरंगे के रंगों से सजा गेट भारत की दिशा में तथा हरे रंग का चांद सितारे वाला गेट पाकिस्तान की ओर है। इनके मध्य दोनों देशों के राष्ट्रीय ध्वज फहरा रहे होते हैं। पर्यटकों के आने पर वहां देशभक्ति के स्वर गूंजने लगते हैं। लोगों में देशभक्ति का जज्बा देखते ही बनता है। ऐसा ही माहौल दूसरी ओर भी नज़र आता है। जहाँ एक ओर भारतीय लोगों का समूह जय हिंद और वंदे मातरम् के नारे लगाता सुनाई देता है वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे सुनाई पड़ते हैं।

भारत तथा पाकिस्तान दोनों देशों के जवान एक संयुक्त जोशभरी परेड प्रस्तुत करते हैं जो हर दर्शक के मन में रोमांच पैदा कर देती है। ध्वजारोहण का समय होने पर सीमा सुरक्षा बल के जवान अपनी अपनी ओर का द्वार खोलते हैं। उसी समय दूसरी ओर का द्वार भी खुलता है, उस समय दोनों तरफ के जवानों की फुर्ती देखते ही बनती है, जिसे देख वहां के लोग तालियां बजाने लगते हैं और जोश से भर जाते हैं।

इसके पश्चात् दोनों देशों के जवान अपने ध्वज उतारते हैं। धीरे-धीरे दोनों देशों के ध्वज एक दूसरे को क्रॉस करते हुए नीचे उतारे जाते हैं। यह दृश्य बड़ा ही प्रिय एवं मनोहारी होता है। इस समय साथ ही राष्ट्रीय गान का गायन होता है तथा सभी दर्शक अपने स्थान पर राष्ट्रीय गान एवं राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान में खड़े हो जाते हैं। इसके पश्चात् परेड समाप्त हो जाती है और दोनों देशों के परेड कमांडर एक दूसरे से हाथ मिलाते हैं और पुनः सीमा द्वार बंद कर दिए जाते हैं।

वास्तव में यदि देखा जाए तो यह अपने आप में एक अनोखी रस्म है, जिसे देखने भारी संख्या में देशी-विदेशी सैलानी आते हैं। वाघा सीमा का यह समारोह पर्यटकों को बेहद प्रभावित करता है।

इसके अतिरिक्त भारत की सीमा के साथ-साथ अन्य छोटे छोटे कई देखने योग्य स्थल हैं। बॉर्डर से बाहर आते ही करीब 1 किमी की दूरी पर "सरहद" नाम का रेस्टोरेंट है जहां भारतीय व्यंजनों के साथ साथ लाहौरी व्यंजनों का भी लुत्फ उठाया जा सकता है। बॉर्डर पर परेड देखने आने वाले सैलानियों में यह भी खासा महत्व रखता है। यहां पर रखा गया फर्नीचर लाहौर से है तथा इस रेस्टोरेंट में आज़ादी से पहले की झलक देखने को मिलती है। वाघा बॉर्डर के साथ-साथ इसे देखना भी अत्यंत रोमांचक है।

राजभाषा प्रबंधक, आंचलिक कार्यालय अमृतसर

लोगों की आस्था व सीमा का बंधन

दिलीप कुमार गुप्ता

भारत को आज़ाद हुए लगभग 69 साल हो गए हैं, फिर भी कुछ ऐसी बातें हैं जो हम कभी नहीं भूल सकते उनमें से सबसे बड़ी बात है, भारत और पाकिस्तान का विभाजन। ये हमारे ज़हन में आज भी बना हुआ है कि कैसे अंग्रेजों ने भारत देश को 2 टुकड़ों में बांट दिया। इसका उदाहरण आज भी हमें देखने को मिलता है। हमारे देश का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा पंजाब प्रदेश, जिसने आजादी में सबसे अधिक योगदान दिया और केवल योगदान ही नहीं अपितु ऐसे वीर सपूत दिए, जिन्होंने इस देश के लिए कुछ ऐसा किया जो आज तक भारत के प्रत्येक नागरिक को याद है। जो जानते हैं ना कि हर एक बात के दो पहलू होते हैं। अच्छा पहलू तो आज की खुशी व दूसरा पहलू एक डरावने सपने की तरह आज भी लोगों के मन में रहता है। हमारे पंजाब प्रदेश के गुरदासपुर जिले में एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ आज भी लोग डर के साथ जीते व सोते हैं। इस क्षेत्र का नाम 'डेरा बाबा नानक' है जो रावी नदी के किनारे पर बसा हुआ है और पाकिस्तान बॉर्डर पर स्थित है।

डेरा बाबा नानक रावी नदी के किनारे पर स्थित सिख धर्म के लिए बहुत पवित्र जगह मानी जाती है। यहाँ दो प्रसिद्ध गुरुद्वारे - एक श्री डेरा साहिब और दूसरा श्री चोला साहिब है। यहाँ सिख धर्म के पहले गुरु श्री गुरुनानक देव जी ने अपना निवास बनाया। यहाँ एक गाँव है, करतारपुर जिसका नामकरण गुरुनानक देव जी ने ही किया था और बँटवारे के बाद ये गाँव पाकिस्तान क्षेत्र में चला गया। यहाँ के लोग आज भी भारतीय हैं। इस बँटवारे का दंश आज भी लोग सहते हैं और यहाँ के लोग चाहकर भी इस क्षेत्र को नहीं छोड़ पाते। इसका बस एक ही कारण है कि लोग अपनी संस्कृति, पूर्वजों की ज़मीन, घर, खेती-बाड़ी छोड़ के कहाँ जाएंगे।

रावी नदी के पूर्व में 'डेरा बाबा नानक' है जो भारत का एक हिस्सा है और रावी नदी के पश्चिम में करतारपुर गाँव (जो भारत का हिस्सा हुआ करता था), जो आज पाकिस्तान का हिस्सा है। डेरा बाबा नानक एक ऐसी जगह है, जहाँ गुरु नानक देव जी ने अपनी ज़िंदगी के अंतिम पलों को जिया था। एक तरह से अगर देखा जाए तो रावी नदी ही भारत और पाकिस्तान को दो अलग-अलग हिस्सों में करती है। करतारपुर में स्थित प्रसिद्ध गुरुद्वारे जिसका सिख धर्म के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है, जिसे हम डेरा बाबा नानक में स्थित सीमा सुरक्षा बल की चौकी से देख सकते हैं।

भारत के डेरा बाबा नानक बी.एस.एफ. की चौकी से दिखाई देता गुरुद्वारा करतार पुर साहिब (पाकिस्तान)

श्री गुरु नानक देव जी ने 1515 में अपने परिवार से मिलने के लिए अपने पहले प्रचार दौरे के बाद पखोके गाँव में अपने चरण डाले। गुरुजी की पत्नी माता सुलखनी जी और उनके दो बेटे बाबा श्री चंद जी और बाबा लखमी दास जी अपने नाना (मूलराज जी) के यहाँ

आए थे। लाला मूलराज जी उस गाँव के पटवारी (राजस्व अधिकारी) थे और गाँव में उनकी बहुत इज्जत थी। जैसा कि गुरु के आगमन की खबर फैल गई, दूर से और आसपास के भक्त उनका आशीर्वाद प्राप्त करने और उनके प्रवचन सुनने आए। उनके परिवार और उनके भक्तों ने उन्हें यहाँ बसने के लिए अनुरोध किया, इस गाँव के मुखिया दोदा चौधरी ने श्री गुरुनानक जी को कुछ जमीन दान में दे दी और यहाँ एक धर्मशाला बनाने का आग्रह किया। आग्रह के बाद पाखोके गाँव जो रावी नदी के पश्चिम में स्थित है। वे अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ यहीं निवास करने लगे। श्री गुरु नानक देव जी ने जिस धर्मशाला की स्थापना 1521 में की थी, वही स्थान आज करतारपुर के नाम से जाना जाता है।

श्री गुरु नानक देव जी ने करतारपुर में, जो आज पाकिस्तान में है, 18 साल गुजारे थे। श्री गुरु नानक देव जी की मृत्यु के बाद उनके बाद उनकी अगली पीढ़ी बेदी ने इस गाँव में रहना शुरू किया परंतु रावी नदी ने गाँव के बहुत सारे क्षेत्र को अपने अंदर समा लिया जिसके कारण उनकी अगली पीढ़ी ने नदी को पार करके एक नए गाँव की नींव रखी, जिसे आज हम डेरा बाबा नानक के नाम से जानते हैं। एक चोला (कपड़े) जो गुरुजी ने मक्का- मदीना की यात्रा के दौरान पहना था यहाँ रखा गया है।

करतारपुर में स्थित गुरुद्वारे के दर्शन के लिए लोगों को भारत-पाकिस्तान के अंतर्राष्ट्रीय नियमों का पालन करना होता है जिस कारण सामान्य जन गुरुद्वारे के दर्शन नहीं कर पाते हैं। अतः यहाँ के लोगों द्वारा प्रत्येक माह भारतीय सीमा में स्थित गुरुद्वारे से चलकर सीमा सुरक्षा बल की चौकी जहाँ से पाकिस्तान में स्थित गुरुद्वारे को देखा जा सकता है पैदल आते हैं और अरदास करते हैं कि भारत-पाकिस्तान की सरकारें मिलकर एक गलियारे का निर्माण करवाए जो भारतीय सीमा से होता हुआ सीधे गुरुद्वारे तक जाए जिससे सामान्य जन भी गुरुद्वारे के दर्शन कर सकें।

अगर हम यहाँ रहने वाले लोगों की बात करें तो यहाँ के लोग मजबूरी में अपनी जिंदगी जी रहे हैं और मजबूरियां कई प्रकार की हैं जैसे-पूर्वजों की संपत्ति, खेत-खलिहान ज्यादा विकसित न होना या उनके पास इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं होना। जब भारत पाकिस्तान का बँटवारा हुआ था, तब पंजाब में 279 गाँव थे जो पाकिस्तान की सीमा से लगते थे जिसमें से 50-60 गाँव वर्तमान में लोगों ने खाली कर दिए हैं और कहीं और जा कर बस गए हैं।

सीमा सुरक्षा बल की चौकी से पाकिस्तान में स्थित गुरुद्वारे के दर्शनों के लिए अरदास करते श्रद्धालु।

भारतीय सीमा से दिखाई देता गुरुद्वारा करतारपुर साहिब।

यहाँ के लोगों की वास्तविक/मूलभूत समस्याओं को देखा जाए तो ये कई प्रकार की है। मगर प्रमुख रूप से सबसे बड़ी समस्या आतंकवाद और पाकिस्तान द्वारा किया जाने वाला हस्तक्षेप है। सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण यहाँ के लोगों में भारत और पाकिस्तान के बीच में लड़ाई होने का डर हमेशा लगा रहता है। अगर हम किसी और क्षेत्र से यहाँ का मूल्यांकन करें तो आज भी ये क्षेत्र बहुत पिछड़े हुए हैं। अगर हम इसकी गहराईयों तक जाएं तो इसका एक कारण ये भी हो सकता है कि सरकार द्वारा यहाँ की मूलभूत समस्याओं को ठीक से नहीं परखना और यहाँ के लोगों को केवल एक वोट बैंक की तरह देखना। इन क्षेत्रों का इतना अविकसित होने का कारण इनका सीमावर्ती क्षेत्र होना ही है। सीमावर्ती क्षेत्रों में केवल सुरक्षा की बातें की जाती हैं, ना कोई विकास की बातें होती हैं और न ही कोई रोजगार की।

हमें यहाँ के लोगों की समस्याओं को समझना होगा। ऐसी समस्याएं जिनके साथ ये लोग रोज जीते हैं। इसके अलावा इनके पास कोई और विकल्प ही नहीं है।

अधिकारी, आंचलिक कार्यालय, गुरदासपुर

खुद पर भरोसा रखें, ईश्वर वही लिखेगा जो आप चाहेंगे।

নালা থোংগম

ইমা কৈথেল

ইমা কৈথেল মালেমসিগী মনুংদা নুপীশিংতগী ওইবা অমত্তা ওইরবা কৈথেলনি।

নুপাশিংতনা হুৎলিংবা তৌনিংবা তৌবা মালেমসিনা নুপীশিংগী মখম কয়ানা কম্পুনা থম্বসি মণিপুরতনি। তানশুংশুনা ভারতকী অয়াং-নোংপোক কমনমনা লাকপনা নুপী ভাড়না চলাইরবা কৈথেল অমা থেংনরবনি মনু ইন্দ্রাংলগী ইমা কৈথেল নহনা অতৈ ওইরোই।

কৈথেল হায়বসি মীপুম খুনিংমক্তা পোৎ কৈথোক কৈশিন তৌমনি। ইমা কৈথেলদা নুপীশিংতনা পোৎ যোনবা পোৎ কৈথোক কৈশিন তৌবনি নুপীগা নুপাগা চপ মান্ননা খুদোং চাবা ফংহল্লি। মসিনা ইমা কৈথেলসি নুপা অমসুং নুপীগী থোনবা কৈডে, খুদোং চাবা চপ মান্ননা ফংবা যাই হায়না উৎপা ঙম্বা অঙকপা অমসুং অতোংবা অমত্তা ওইরিবা মফমনি।

মিংচম লানচৌগী অমসুং লান মতমদা মণিপুরী নুপীশিংনা অকিবা লৈতনা ইমা কৈথেলদা থোক্লুনা থৌনা ফনা পোৎচৈ যোল্লুনা মত-মচু কয়াগী হিংনবগী লম্বীদা অতৌবা থৌদাং লৌরি। মত-মচু কয়া লাইরিক লাইতু তমহল্লুনা অনৌবা অতাইফংনা মণিপুর অমা শেমশন্ননবা হোৎনবদা অতৌবা থৌদাং লৌরিবী মণিপুরী নুপীশিংনি।

মণিপুর ভারতকী অয়াং-নোংপোকপা লৈবা চিং-শাং, ফুরোম, ইমফ, মখল কয়াগী উপা-থাপাকশিংগী ইমং, মালেমগী অতাংবা শা-উচেক কয়াগী তাক্কাকম ওইরিবা অমসুং মালেমগী অফাবা মীওই কয়ানা ভারতকী SWITZERLAND নি হায়না হায়নরিবা যাম্নসু শানবা যাম্নসু ইংনবা চহি তুম্না অশং-অমানতনা শন্নবা কজপুবা লমলমনি।

লমদং খাংথরা কন্নবদা মণিপুরীশিং মালেমদা শীংগোনরিবনি। লমলম অসিদা নুপীশিংনু ইমা হায়না কৌনদুনা অফাংবা থাক্তা ইকাই খুম্নে। মতম অসিগী নুপীশিংতগী কৈথেলনি হায়দুনা হাইরদুনা কৈথেলসু ইমা কৈথেল হায়না খাংনে। ইমা কৈথেলদা চাউবা পোৎ-যোলগী নুপী লিশিং মনি মুক্তা মখল মখা কয়াগী পোৎশিং যোল্লি। কৈথেল অসিদা পোৎ যোলবা নুপা অমত্তা যাউদে। কনা হুপ্তা নুপীদা লাইরবা ওইরবসু, চিতম চানবা ওইরবসু, চৎনিংবা ফর্দ অমসুং ওইনিংবা অমং ওইরবসু ইমা কৈথেলদা পোৎ যোলবা অমসুং লৈবা যাই, অদিংবা অমত্তা লৈতে।

ইমা কৈথেলদা কমলিগী নুপীশিং পোৎ যোলবখক্তা নত্তনা মণিপুরগী ফুংগী লাইরিক লেখুদা হোৎনবসু অতৌবা থৌদাং লৌরি। কৈথেল অসিদা অহংবা থামম কয়া থারদা নত্তনা মরূ ওইবা থোংখাং কয়া লৌখৎনবা হোৎনবগী চৌরকখমনি। কনা খুম্না নুংখিল মতমদা ইমা কৈথেলদা কোয়না চৎপদা পেনবীগনি, ইমা কয়ানা RADIO অমা, অমদা অমগা পুনশিন্নদুনা চৌখিক-চৌখিক ওইরিবা লৈবাক্তী থৌদোক থাখোক্তী মতমদা শন্ননা। মনি পুমুমক কমান্দীসু ইখিল চাউনা নিশিংগা থোক্লুনা মতমগী চৌরককনবনি। মালেমদা মমিং চৎলিবা মণিপুরগী অহানবা অমসুং অনিঙবা নুপী লান ইমা কৈথেলদগী চৌরকখিবনি। মতম অসিগী চৌরাকপা ইটৌনা ভারত সরকার অমসুং মণিপুর সরকারবু থক থক নিকহল্লুনা কংলানগী থাগাম থাউরক হোংদোকহনখিবনি। মণিপুরগী মনুংশিংনা চৎনা CRIME কয়া অমসুং FAKE ENCOUTNER কয়াগী থাখোক অমসুং মসিগী অতুম্বা থাহোন পুথোক্লুনা হোৎনবদা ইমা কৈথেলগী ইমাশিংনা অনাংবা থাবকথোক কয়া পুখোক্লুনা লমচিং তৌরা ওইরিবনি।

অরিবা মতমদা মণিপুরগী নুপীশিং যুমদগী মপান থোক্লকমদে। নুপীশিংনা ইমুং মনুংগী থবক লম্বক তৌবগী চৎনগী থম্মনদা মীওই শন্ননা হোৎনাশ্পী অমুসু ইমা কৈথেলগী মপান্না নুপীশিংনা মপান থোক্লুনা শু-নোঙা, লৈবাক্তী থবক থৌরম কয়াদা শরুক যানা অমসুং লৈবাক্তী শেল থুমগী চিংতম থাংহজাগা হোৎনবদা অতৌবা থৌদাং লৌবা হেনগৎলকলি। মালেমদা নুপীশিংনা কনি তৌবা যানা, থৌনা কয়াম থনা যানা, কয়াদা চৈ শিংবা, ভাকশীবা ওয়া, অতুম্বা শাম্বা অমসুং অতুম্বা পুখোকপা শাম্বা ইমা কৈথেলগী ইমাশিংনা শিংদেনা মাতুংনা মালেমদা উৎপা ঙমলি। মসিনানি মণিপুরগী ইমা কৈথেল মালেমগী অমত্তা ওইরবা অতোংবা মফমনি হায়না মীয়াম্না শোয়াদ্রিবা।

- অধিকারী, থাংমৈবন্দ ইম্ফাল

ईमा-कयिथल

बाला थोंगगम

पत्रिका के हर अंक में क्षेत्रीय भाषा की कोई न कोई रचना अवश्य रहती है। इस बार सामने मणिपुरी का लेख छापा गया है। आप मणिपुरी लेख का हिंदी सार भी पढ़िए और जानिए, कैसे मणिपुरी महिलाएं चलाती हैं पूरा का पूरा बाज़ार

ईमा कयिथल विश्व का एक मात्र बाज़ार है, जहाँ केवल महिलाएं ही कार्य करती हैं। माँ को मणिपुरी में ईमा कहते हैं। कयिथल शब्द का मतलब होता है बाज़ार। यह बाज़ार केवल महिलाओं के लिए है जहाँ वो स्वयं के सशक्तिकरण के लिए कार्य करती हैं।

ईमा कयिथल विश्व की एक मात्र ऐसी जगह है जहाँ सभी प्रकार की व्यावसायिक गतिविधियाँ महिलाओं द्वारा ही की जाती हैं।

यह बाज़ार सभी लोगों के लिए खुला है। यहाँ किसी भी जाति या धर्म के लिए कोई भी पाबंदी नहीं है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब भारत पर आक्रमण हुआ था, तब भी मणिपुरी महिलाओं ने बिना किसी डर के अपना व्यवसाय कार्य जारी रखा और अपना घर परिवार चलाया।

ईमा बाज़ार, इंफाल के मुख्य शहर में स्थित है, जो कि मणिपुर की राजधानी है। मणिपुर बहुत ही छोटा राज्य है, परंतु यह एक आकर्षक जगह है, जहाँ हमें दुर्लभ प्रजाति के पक्षी तथा फूल जैसे कि सिरोइ लिलि तथा शगाई जैसे हिरण, जो विश्व के किसी भी हिस्से में नहीं पाए जाते हैं। इन सब कारणों से मणिपुर को भारत का स्विट्ज़रलैंड भी कहा जाता है।

मणिपुरी महिला अपने गुणों के कारण समाज में मणिपुरी पुरुषों से ऊँचा दरजा रखती हैं।

ईमा बाज़ार में लगभग 4000 महिलाएं भिन्न प्रकार के व्यवसाय करती हैं। यहां काम करने वाली कोई भी महिला किसी भी जाति या धर्म की हो सकती है।

मणिपुरी महिलाएं अपने परिवार के उत्थान के लिए समान रूप से उत्तरदायी होती हैं। ईमा कयिथल में कार्य करने वाली महिलाएं सभी अपने आप को रेडियो तथा अखबार के माध्यम से अवगत रखती हैं, मणिपुर राज्य में अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध दो क्रांतियां हुई थीं, जो कि नुपिलान के नाम से जानी जाती हैं। मणिपुरी में महिला-युद्ध को नुपिलान कहते हैं। जिसकी शुरुआत भी ईमा कयिथल से हुई थी।

अधिकारी, शाखा इंफाल

भाषा, साहित्य और संस्कृति की विरासत : सीमावर्ती क्षेत्र बिहार

भारती

भारत बहुभाषिकता और भौगोलिक विविधताओं वाला देश है। मुझे गौरव महसूस होता है कि मैं ऐसे राष्ट्र की नागरिक हूँ। भारत के प्रत्येक प्रांत में रहने वाला व्यक्ति केवल भारतीय है। बेशक हम अलग-अलग राज्यों में क्यूं न रहते हों, भले ही हमारे रहन-सहन, पहनावे, खान-पान, बोली, भाषा में कितना भी अंतर हो, पर हम भारतीय हैं। हमारी संस्कृति एवं परंपरा एक ही है। विश्व पटल पर हमारी यही विविधता हमें अन्य राष्ट्रों से विशेष बनाती है।

हम जानते हैं भारत के 29 राज्य एवं 7 संघ शासित राज्य हैं। इनमें निवास करने वाले प्रत्येक का हमें सम्मान करना चाहिए। आज हम जिस समय में रह रहे हैं वह क्षेत्रीयता तक सीमित नहीं है। आज का युवा पूरे भारत का भ्रमण करता है, वहीं जीवन यापन कर रहा है। हम अपने ही बैंक में देखें तो मुझे यहाँ पूरा भारत नजर आता है। लेकिन फिर भी हम आए दिन कुछ लोगों को क्षेत्र विशेष के व्यक्तियों पर क्षेत्रीय टिप्पणियां करते देख और सुन सकते हैं। मैं जब भी ऐसा सुनती हूँ तो गुस्से से भर जाती हूँ। आखिर हम कैसी मानसिकता लेकर जी रहे हैं। हम अपनी भावी पीढ़ी को क्या सिखा रहे हैं? बच्चे जो देखते और सुनते हैं, सामान्यतः वे भी वैसा ही करने लगते हैं। अभी कुछ समय पहले की बात है। मेरे पड़ोस के बच्चे आपस में खेल रहे थे। वहीं एक बच्चा जिसने बालों में काफी तेल लगाया हुआ था जिस कारण उसके बाल चिपके हुए से लग रहे थे। जिसे देख बाकी बच्चे जोरों से हँसने लगे और उस पर एक ने हँसते हुए कहा 'देखो यह तो बिहारी आ गया'। ये सुनकर मेरे कान खड़े हो गए। चूंकि वह बच्चा बिहार क्षेत्र का नहीं था। उस बच्चे ने जो कहा उसमें उसका दोष न हो क्योंकि वह इसका मतलब तक नहीं जानता। हां! उसने अपने घर-परिवार, मोहल्ले में ऐसे बाल बनाने वालों पर इस प्रकार की टिप्पणी करते हुए सुना जरूर होगा। आखिर ऐसा क्यों है? हमें यह अधिकार आखिर किसने दिया। प्रत्येक राज्य की पहचान वहाँ के व्यक्ति विशेष की अस्मिता से जुड़ी है। क्या हम उन राज्यों की संस्कृति के बारे में जानते हैं? क्या हम जानते हैं कि उस राज्य ने कितने ही महान विचारकों, शासकों, लेखकों, बौद्धिकों को जन्म दिया। प्राचीन महान सभ्यताओं के अवशेष आज भी वहाँ मौजूद हैं। अपने इस लेख के माध्यम से मैं आपको उस बिहार की भाषिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत और उपलब्धियों से परिचय करवाऊंगी, जिन्हें जाने बिना हम इस प्रकार की टिप्पणियां करते हैं।

भाषाई दृष्टि से इस राज्य में भोजपुरी, मैथिली, मगही, बज्जिका, और अंगिका भाषाएं बोली जाती हैं। सभी भाषाएं बिहार में व्यापक रूप से बोली जाती हैं जिनमें मैथिली को संवैधानिक मान्यता प्रदान की गई है। मगही मगध प्रदेश की भाषा थी।

बिहार का प्राचीन नाम विहार था जिसका अर्थ 'मठ' होता है। यह भारत के पूर्वी भाग में स्थित है। यहाँ गंगा, सोन, कोसी नदियां बहती हैं जिस कारण यह राज्य प्राकृतिक वनस्पति और जीव जंतुओं से समृद्ध है। भाषाई दृष्टि से इस राज्य में भोजपुरी, मैथिली, मगही, वज्जिका, और अंगिका भाषाएं बोली जाती हैं। सभी भाषाएं बिहार में व्यापक रूप से बोली जाती हैं जिनमें मैथिली को संवैधानिक मान्यता प्रदान की गई है। मगही मगध प्रदेश की भाषा थी। प्राचीन बिहार मूलतः मगध प्रदेश था। मौर्य शासन का आरंभ 352 ईस्वी में मगध में ही हुआ। इसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी जो वर्तमान का पटना शहर है। 240 ईस्वी में मगध में गुप्त साम्राज्य स्थापित हुआ जिसने विश्व अर्थव्यवस्था पर प्रभुत्व हासिल किया। भारत के कुछ महान राजाओं समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त मौर्य, विक्रमादित्य, और अशोक के शासन में यह सत्ता, शिक्षा संस्कृति का मुख्य केंद्र था।

नालंदा विश्वविद्यालय

व्यक्तियों पर नहीं, विषयों पर चर्चा करने से ज्ञान बढ़ता है।

विक्रमशिला और नालंदा विश्वविद्यालय इसके मानक हैं। नालंदा विश्वविद्यालय को केंद्र और राज्य सरकार के प्रयासों से पुनः प्रारंभ कराया गया।

धर्मसुधारक और दार्शनिक गौतम बुद्ध और भगवान महावीर का जन्म इसी भूमि पर हुआ। आज विश्व का एक बड़ा हिस्सा इनके बताए गए मार्ग पर चल रहा है। यह बुद्ध की पवित्र स्थली है। बौद्ध धर्म का विस्तार यहीं से होकर संपूर्ण विश्व में स्थापित हुआ। राज्य में

श्री पटना साहिब

स्थित महाबोधि मंदिर को यूनेस्को की विरासत स्थली घोषित किया गया है। इतना ही नहीं बिहार वीर कुंवर जिनका 1857 की लड़ाई में विशेष योगदान रहा है। सिक्ख धर्म संस्थापक दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह जी और आदिवासी समाज के जननायक बिरसा मुंडा जैसे महान पुरुषों की जन्मस्थली है। गांधी जी द्वारा चंपारण में चलाए गए स्वतंत्रता आंदोलन के बिगुल की गूंज चंपारण से अंग्रेजी शासकों को भी सुनाई पड़ी थी। जयप्रकाश नारायण ने स्वतंत्रता आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन में जहां महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, वहीं वह जेपी क्रांति के सूत्रधार बने। दशरथ मांझी की कर्मठता और संघर्ष हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है।

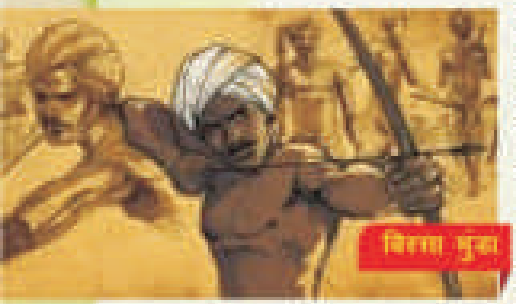

बिरसा मुंडा

बिहार की भूमि का साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है। मैथिल को बहुत ही मीठी भाषा माना जाता है। इसी भाषा में अपने काव्य की रचना करने वाले मैथिल कोकिल विद्यापति जी को कैसे भुला जा सकता है। विद्यापति ने क्या नहीं लिखा शायद ही ऐसा कोई विषय हो जो उनसे छूटा हो। बच्चे के जन्म से लेकर लोक संस्कार तक ऐसा कोई भी अवसर नहीं, जिस पर इस लोक कवि ने गीतों की रचना न की हो। इन गीतों के भाव एवं भाषा माधुर्य से न केवल मिथिला अपितु पूरा पूर्वांचल समृद्ध हुआ है। इनकी पदावली मिथिला (बिहार) के कवियों का आधार तो है ही साथ ही नेपाल का शासक, सामंत, कवि भी मैथिली में रचना करने लगे। जनकपुर जो कभी मिथिला की राजधानी हुआ करती थी, आज नेपाल में है। इसलिए महाकवि के लोकगीत नेपाल में मैथिल भाषी क्षेत्रों में आज भी लोकप्रिय है। नेपाल राजदरबार पुस्तकालय में विद्यापति की गीत नाम से विद्यापति पदावली पाण्डुलिपि के रूप में रखी गई। आधुनिक कवि रामधारी सिंह दिनकर, नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु की रचनाएं आज के जनमानस और समाज पर टिप्पणी करती हैं। ये रचनाएं आज के आधुनिक भारत का दर्पण प्रस्तुत करती हैं।

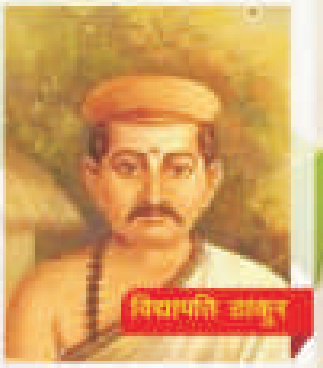

विद्यापति ठाकुर

मधुबनी चित्रकारी

मधुबन प्रदेश मधुबनी चित्रकला जो न केवल भारत बल्कि अंतर्राष्ट्रीय जगत में अपनी पहचान बना चुकी है इस चित्रकारी का प्रारंभ बिहार के छोटे से गांव मैथिली में हुआ। मुख्यतः यह चित्रकारी गांव की महिलाएं अपने घरों की दीवारों की सजावट के लिए किया करती थीं। इस चित्रकारी ने धीरे-धीरे गांव की सीमाओं को तोड़कर अंतर्राष्ट्रीय जगत में प्रवेश किया। मधुबनी चित्रकला घर की दीवारों से विस्तार पाकर वस्त्रों, वित्रकारी (फाइन आर्ट) के क्षेत्र में शामिल हुई। मधुबनी चित्रकारी को बाजारों में खूब पसंद किया जाता है।

शिक्षा, प्रशासन, राजनीति, रंगमंच, फिल्म और खेल जगत आदि क्षेत्रों में भी यह पीछे नहीं रहा है। मुझे गर्व होता है सोचकर की मैंने विशिष्टताओं से भरे इस देश में जन्म लिया, और मैं सम्मान करती हूं उन सभी क्षेत्रों का, जिन्होंने भारत को भाषिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत प्रदान की। भारत विश्व में अपनी इन्हीं विशेषताओं और समृद्ध परंपरा और संस्कृति के कारण आकर्षण का केंद्र बना है।

राजभाषा अधिकारी, प्र.का. मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग

पाकिस्तान वाले सीमावर्ती क्षेत्र 'झंग' का दर्द

प्राणनाथ

1947 में विभाजन के बाद पाकिस्तान के झंग क्षेत्र से मुस्लिमों द्वारा भागने पर मजबूर कर दिए गए लोगों में श्री प्राणनाथ और उनके परिजन भी शामिल थे। जब वे भारत आए थे तब उनकी उम्र मात्र 14 वर्ष थी। उन्होंने संघर्ष किया, मेहनत की और आज उनका अपना व्यवसाय है, भरा-पूरा परिवार है। लेकिन विभाजन की एक टीस उनकी यादों में जुड़ी है, बिछुड़ने का दर्द है। व्यवसाय में पिता का हाथ बँटाने वाले 43 वर्षीय उनके बेटे श्री रामप्रकाश अपने पिता का दर्द समझते हैं, पर उस टीस के साथ नहीं जो उनके पिता ने महसूस की है।

प्राणनाथ कहते हैं - देश बँटते हैं, लेकिन लोग नहीं - यही सोचकर हमने पाकिस्तान को अपना देश मान लिया था और 14 अगस्त को पाकिस्तान का झण्डा भी फहराया था। पर एक हफ्ते के भीतर ही झंग में हिंदुओं की हत्या का खूनी खेल शुरू हो गया। हरी सलवार और सफेद कमीज पहने कुछ मुस्लिमों ने हिंदुओं को चुन-चुनकर मारना शुरू कर दिया। 17 अगस्त को ढोल पीटकर कहा गया, 'हिंदुओ यहाँ से निकल जाओ।' उस समय की यादें बड़ी दुःखदायी हैं। हमने कभी नहीं सोचा था कि अपने जन्म-स्थान को इस तरह छोड़ना पड़ेगा।

आज लगता है कि भारत का बँटवारा बहुत गलत हुआ और अगर उस समय के राजनीतिज्ञ चाहते तो यह टाला जा सकता था। यह इतना मुश्किल नहीं था। कभी-कभी तो लगता है कि हमारे नेताओं ने भारत के साथ वफादारी नहीं की। कल तक पाकिस्तान का जो भाग हमारा जन्म स्थान था, वहाँ के लोग हमारे परिवार की तरह थे, आज वही पाकिस्तान भारत के लिए घातक दुश्मन बन गया है। अब तो दोनों देशों की परिस्थितियाँ बदल गई हैं। पाकिस्तान अब इस्लामी देश है और वहाँ रह रहे हिंदू बहुत बुरी हालत में हैं।

झंग के जो लोग अपनी बेटियाँ छोड़ कर आए या कहें कि उनकी बेटियाँ छीन ली गईं, उनके दिलों में विभाजन आज तक चुभता है। केवल झंग से ही 15-30 वर्ष की लगभग 400-500 बेटियाँ वहाँ मुसलमान उठाकर ले गए थे। पर हमारे बाद वाली पीढ़ी में इस विभाजन का दर्द उतना नहीं है, जितना हमें है। यह स्वाभाविक भी है।

झंग की जिन गलियों में हम पले-बढ़े और फिर एक दिन जिन्हें हमें छोड़ना पड़ा, उन्हें देखने का मन तो करता ही है। लेकिन पाकिस्तान के साथ संबंध इतने बिगड़ चुके हैं कि ऐसा संभव नहीं लगता। पर इसका अफसोस नहीं है। झंग के अपने घरों से बेघर कर दिए लोगों में अधिकतर ने पंजाब में शरण ली थी। उनमें से कई लोग एकाध बार अब पाकिस्तान हो आए हैं। वहाँ उनके पुराने परिचित उनका स्वागत करते हैं और बिछुड़ने का अफसोस भी जताते हैं, पर ये सब तभी तक होता है जब तक वे पाकिस्तान में होते हैं। पाकिस्तान से लौटते ही उनका वह परिचित झंग का नहीं, मात्र एक पाकिस्तानी बन जाता है। कहने का अर्थ है कि अब भी झंग के पुराने परिचित गले तो मिलते हैं पर रिश्तों में वह गरमाहट नहीं रही।

अब सच केवल इतना है कि विभाजन से पहले भी हम हिन्दुस्तानी थे, हिन्दुस्तानी हैं और हिन्दुस्तानी ही रहेंगे। किंतु अब भी अपने झंग की यादें भुलाए नहीं भूलतीं।

श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि "जहाँ लोगों के दिलों में प्यार नहीं, वहाँ जाकर क्या करेंगे"

प्राणनाथ के बेटे रामप्रकाश का जन्म पंजाब में ही हुआ था। झंग कभी देखा ही नहीं। वहाँ के बारे में अपने पिताजी से और अन्य रिश्तेदारों से ही सुना। लगता है कि विभाजन के बाद भारत में बहुत अधिक विकास हुआ किंतु पाकिस्तान के झंग जैसे क्षेत्र अब भी बिल्कुल पिछड़े हैं।

मैं व्यवसाय के सिलसिले में विभिन्न देशों में जाता रहता हूँ। विदेशों में कई बार झंग के लोग मिले हैं और हमने एक-दूसरे को बोली से पहचाना है। एक छोटा सा उदाहरण देता हूँ। एक बार मैं सपरिवार लंदन गया था। वहाँ एक जगह अपनी पत्नी के साथ मैं अपनी झंग की बोली में ही बातें कर रहा था। उसे सुनकर हमारे सामने बैठे व्यक्ति ने पूछा कि आप कहाँ के रहने वाले हैं। मैंने बताया कि मेरे पूर्वज झंग के रहने वाले थे। इस पर वह बोला कि

फिर तो हम हमवतनी हुए और बातों का सिलसिला चल पड़ा। बातचीत के दौरान मैंने अपनी बेटी युक्ति से कुछ पूछा। बेटी का नाम सुनकर वह व्यक्ति चौंका और बोला, 'ये युक्ति नाम क्या हुआ? हमारे पाकिस्तान में तो ऐसा नाम नहीं रखते।' मैंने जवाब दिया, 'मैंने आपसे कहा था कि मेरे पूर्वज झंग के थे। पर विभाजन के बाद से हम पंजाब में हैं और मैं हिंदू हूं।' यह सुनते ही जैसे उसे बिजली का झटका लगा और वह बिना कुछ कहे तीन-चार सीट पीछे जाकर बैठ गया। यानी हिंदुस्तानी का नाम सुनते ही लगभग हर पाकिस्तानी को कुछ बदमिजाजी हो जाती है। यही वर्तमान परिस्थितियों का सच है। लेकिन सभी ऐसे हैं, ऐसा भी नहीं है। कभी-कभार कुछ अच्छे लोग भी मिल जाते हैं।

जैसा मुझे बताया गया है कि मेरा परिवार झंग से कितनी कठिन परिस्थितियों में आया था। हमारे परिवार को झंग छोड़कर आने के बाद काफी संघर्ष करना पड़ा था। मुश्किल भरे उन दिनों को मैंने बहुत करीब से देखा है, इसलिए उसकी पीड़ा भी है। हिंदुस्तान आकर अपने परिश्रम से ही हम समृद्ध हुए हैं। झंग के अपने मकान आदि जगहों के चित्र देखने को मिले थे। चित्र देख कर लगता है कि वहां पिछले 70 वर्षों में कोई विकास हुआ ही नहीं है। मकानों के दरवाजे पुराने और टूटे हैं। यहां तक की हमारे झंग वाले घर में मेरे दादाजी का नाम भी जस का तस खुदा हुआ है। पर झंग जाने की मेरी कोई खास इच्छा नहीं है। जाकर करेंगे भी क्या? यदि कभी दोनों देशों के बीच अच्छे संबंध हुए तो एक बार देखना भर चाहूंगा। जब वहां लोगों के दिलों में ही प्यार-मोहब्बत नहीं है तो केवल जगह देख कर आने की इच्छा नहीं होती। हम अपने देश में खुश हैं, वे अपने देश में खुश रहें। मेरी पैदाइश एक स्वतंत्र देश में हुई है और यहीं की मिट्टी मुझे ज्यादा भाती है।

अपने माता-पिता और विभाजन के बाद हिंदुस्तान आए अन्य लोगों की आप-बीती सुनकर दुःख तो जरूर होता है, पर वह पीड़ा जो उनमें है, उसका शायद हम उतना अनुभव नहीं कर पाते। पर क्या यह स्वाभाविक नहीं है? पीड़ा जिसने भोगी होती है, वही उसे उस तीव्रता से महसूस भी कर सकता है। आज हम तो केवल कल्पना ही कर सकते हैं। 70 वर्ष बहुत होते हैं। इतने समय में तो पीढ़ियां बदल जाती हैं। बंटवारे के ठीक बाद वाली पीढ़ी यानी हम, बंटवारे का कष्ट झेल चुकी पीढ़ी के दर्द की कल्पना तो कर सकते हैं, पर हमारे बाद वाली पीढ़ी के लिए तो शायद इसे समझाना भी मुश्किल होगा।

कृष्ण या करीम की, कुदरत अलग कोई नहीं,
अल्लाह या ईश्वर, तेरी सूरत अलग कोई नहीं।

पान गंगा-जल करो, या आबे जम जम को पियो,
जल तत्व इनमें एक है, रंगत अलग कोई नहीं।

महादेव तो मंदिर में हैं, और मुस्तफा मस्जिद में,
पुराण - कुरान की आयत भी अलग कोई नहीं।

राम या रहमान हो, एक सीप के मोती हैं दो,
पुजारी-मुल्ला की है, इबादत अलग कोई नहीं।

नरक या दोजख, बुरे हैं, पापियों के वास्ते,
हिंदुओं को स्वर्ग तो जन्नत अलग कोई नहीं।

लेखक बैंक के अमूल्य ग्राहक हैं।

कार्टून कोना

प्रदीप कुमार राय, मुख्य प्रबंधक (सतर्कता विभाग)

तवांग मठ

अरूप सरकार

'तवांग', यह नाम लेते ही मेरा मन हर्षोल्लास से भर जाता है। आज मैं आपको तवांग की सुंदर घाटियों की सैर कराना चाहता हूँ, जिससे बहुत कम लोग परिचित हैं। तवांग भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में अरुणाचल प्रदेश राज्य के पश्चिमोत्तर भाग में स्थित है। भूटान और चीन तवांग के सीमावर्ती देश हैं। तवांग की यात्रा करने के लिए सबसे अच्छा समय जून और अक्तूबर के बीच है। यहाँ अक्तूबर में 'टूरिज्म फेस्टिवल' होता है। धरती का छुपा स्वर्ग, तवांग के पहाड़ों के दृश्य, दुरूह, विलक्षण और छोटे गाँव, जादुई गोम्पा, विषम पहाड़ियाँ, बर्फ से ढकी चोटियाँ, चमकती नदियाँ, गूँजते झरने, शांत सरोवर आदि को दर्शाता है। तवांग शब्द अपने आप में एक रोचक कहानी समेटे हुए है।

यह भारत का सबसे बड़ा बौद्ध मठ है और ल्हासा के पोताला महल के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मठ है। तिब्बत की राजधानी ल्हासा में बने मठ के बाद यह एशिया का सबसे बड़ा मठ है। यह तवांग नदी की घाटी में तवांग कस्बे के निकट स्थित है।

यह मठ दूर से दुर्ग जैसा दिखाई देता है। इसके प्रवेश द्वार का नाम काकालिंग है जो देखने में झोपड़ी जैसा लगता है और इसकी दो दीवारों के निर्माण में पत्थरों का प्रयोग किया गया है। इन दीवारों पर खूबसूरत चित्रकारी की गई है जो पर्यटकों को बहुत पसंद आती है।

तवांग शब्द उद्धृत है तवांग से जिसमें 'त' का अर्थ है 'घोड़ा' और 'वांग' का अर्थ है 'चुनना', अर्थात घोड़े द्वारा चुना गया। पौराणिक कहानियों के अनुसार तवांग मठ का स्थान 'मेरा लामा' के घोड़े द्वारा चुना गया था। 'मेरा लामा' को एक मठ बनाने का आदेश दिया गया था। वह मठ बनाने के लिए सही जगह का निर्धारण नहीं कर पा रहा था। एक दिन वह गुफा में दैवीय शक्ति की मदद के लिए प्रार्थना कर रहा था। जब वह बाहर आया तो उसका घोड़ा खो गया था। बाद में वह एक पहाड़ की ऊँचाई पर मिला। 'मेरा लामा' ने भगवान का इशारा समझकर उसी स्थान को तवांग मठ बनाने के लिए चुना।

तवांग 400 वर्ष पुराने मठ के लिए प्रसिद्ध है। इस मठ के परिसर में 65 भवन हैं। दलाई लामा ने तवांग के रास्ते ही भारत में शरण ली थी। यह बौद्ध धर्म के अनुयायियों का महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यहाँ बुद्ध की 7 मीटर ऊँची स्वर्ण प्रतिमा देखने लायक है। इसमें लामा के लिए घर, स्कूल, पुस्तकालय और एक म्यूजियम भी है। इस मठ को 'गाल्देन नामग्याल ल्हात्से' भी कहा जाता है जिसका अर्थ है 'धरती का स्वर्ग'। जब रात की रोशनी में मठ की तरफ देखते हैं तो एहसास होता है कि इसका नाम कितना सटीक है। तवांग मठ ऊँचाई पर स्थित होने के कारण वहाँ से तवांग शहर का और तवांग शहर से इस मठ का नजारा काफी सुंदर दिखाई देता है।

तवांग में मुख्यतः मोनपा जाति निवास करती है। मोनपा लोग बुद्ध धर्म के अनुयायी हैं। यहाँ का पहनावा यहाँ के लोगों को रंगों से भर देता है। यहाँ की औरतें तिब्बती स्टाइल का गाउन पहनती हैं जिसे 'चुपा' और आदमी तिब्बती स्टाइल की शर्ट पहनते हैं जिसे 'तोह-थुंग' कहते हैं। और ये लोग जो तिब्बती स्टाइल का कोट पहनते हैं उसे 'खंजर' कहते हैं। यहाँ के लोग एक खास तरह की टोपी पहनते हैं जिसे 'गामा ओम' कहते हैं और ये याक के बालों से बनी होती है।

यहाँ तवांग मठ के अलावा और भी कई अन्य मठ हैं। इसमें दलाई लामा के हाथ और पैरों के निशान हैं जिसे दर्शन करने के लिए सुरक्षित रखा गया है। 'रिग्यालिंग मठ' हरियाली और शांत वातावरण में स्थित है। यह बैठने, ध्यान लगाने और अंतरात्मा की खोज के लिए सबसे अच्छी जगह है। यहाँ पर एक मठ 'तक- सांग' भी है जिसे 'टाइगर्स डेन' भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ के लोगों के अनुसार जब इनके गुरु पद्मसंभव आए थे तो एक टाइगर ने ही उनका स्वागत किया था। तवांग में और भी अनेक मठ हैं जिनकी अपनी अपनी विशेषताएं हैं।

अपने आप पर यकीन रखना सफलता की पहली सीढ़ी है।

तवांग पर फ्रोजन लेक भी है जिसे सुनकर थोड़ा आश्चर्य भी होता है कि तवांग जैसी जगह में झील भी है। यहाँ पर छोटी बड़ी लगभग 100 से भी ज्यादा झीलें हैं पर उनमें से कुछ बहुत प्रसिद्ध हैं जैसे 'पंगांग-टेंग-त्सू' और 'संगत्सर लेक' जिसे अब माधुरी लेक भी कहा जाता है। इन झीलों को देखकर दिल खुश हो जाता है। 'पंगांग-टेंग-त्सू' लेक से बहुत ही मनमोहक आवाज आती है। इस लेक के एक तरफ बौद्ध धर्म के झंडे लगे हुए हैं जिन्हें माना जाता है कि ये हवा को और आसपास के माहौल को शुद्ध करते हैं और दूसरी तरफ पहाड़ हैं जिनमें लाल और हरे रंग के पेड़ हैं, जिन पर सर्दियों में बर्फ जमी रहती है। इन झीलों के पूरे रास्ते पर 'ऑर्किड्स' दिखते हैं जिनकी वजह से रास्ता बहुत सुंदर दिखता है।

इसके अलावा यहाँ पर्वत शिखरों में गोरिचेन पर्वत शिखर, जैशिला पर्वत शिखर, सेलापास पर्वत शिखर आदि मुख्य हैं। झरनों में नूरनंग और बीटीके बहुत दर्शनीय हैं। तवांग में थिम्बू हॉट वाटर स्प्रिंग और मागू हॉट वाटर स्प्रिंग भी हैं। इस हॉट वाटर स्प्रिंग में गर्म, सल्फर युक्त पानी होता है जो चर्मरोगों से लड़ने में काफी उपयुक्त है। ये पहाड़ियों के बीच स्थित है। तवांग में बहुत सारे देखने योग्य स्थान हैं। उनमें से एक है 'तवांग वार मेमोरियल', जो 40 फीट ऊँचा है। यह स्मारक 1962 में भारत-चीन की लड़ाई में शहीद हुए जवानों की याद में 1999 में बनवाया गया था।

अतः मैं आपको यह कहना चाहता हूँ, कि एक बार इस शहर में जा कर इसकी सुंदरता का आनंद जरूर लें।

राजभाषा प्रबंधक, आँचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

आँचलिक कार्यालयों को राजभाषा पुरस्कार

बेंगलूरु बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा राजभाषा शील्ड प्राप्त करते सिकंदर, बेंगलूरु शाखा के मुख्य प्रबंधक श्री गौरीलाल शर्मा, तथा आँचलिक राजभाषा अधिकारी सुश्री अभिलाषा दत्ता

आँचलिक कार्यालय लुधियाना को राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु वर्ष 2016-17 का नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), श्रेणी 'ग' का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

फरीदकोट नराकास द्वारा विशेष संगोष्ठी का आयोजन

विषय : 'ग्राहक सेवा में क्षेत्रीय भाषा एवं हिंदी भाषा का महत्व'

श्री अमरजीत सिंह गुजराल, आँचलिक प्रबंधक, आँचलिक कार्यालय फरीदकोट, श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, दिल्ली-1 को बाबा फरीद का चित्र भेंट करते हुए।

संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर कार्यालयों के प्रतिनिधियों का मार्गदर्शन करते श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, दिल्ली-1। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता श्री राजिन्दर सिंह बेदी व नराकास अध्यक्ष श्री अमरजीत सिंह गुजराल भी मंचासीन हैं।

शाखा प्रबंधकों के लिए विशेष संगोष्ठी

प्रधान कार्यालय द्वारा 'राजभाषा नीति और उसका कार्यान्वयन' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि थे, संसदीय राजभाषा समिति के अनुसंधान अधिकारी श्री दिलबाग सिंह। इस अवसर पर आंचलिक प्रबंधक श्री जी. एस. सरना, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री गजिंदर सिंह बेदी, सहायक महाप्रबंधक श्री बी. के. सूद, प्रधानाचार्य सीबीबीआरटी श्री एन.पी.सिंह, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री इंद्रपाल कौर व समस्त शाखा प्रबंधक विशेष रूप से उपस्थित रहे। श्री दिलबाग सिंह जी ने संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली के परिप्रेक्ष्य में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की गंभीरता से सभी शाखा प्रबंधकों को अवगत करवाया। आंचलिक प्रबंधक श्री जी. एस. सरना द्वारा मुख्य अतिथि का धन्यवाद ज्ञापित किया गया और सभी सहभागियों को अपने कार्यालयीन कार्य हिंदी व क्षेत्रीय भाषा में करने के निर्देश दिए गए।

अखिल भारतीय राजभाषा अधिकारी सम्मेलन

22 से 24 फरवरी 2017 को प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा अखिल भारतीय राजभाषा अधिकारी सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें देश भर से बैंक के सभी राजभाषा अधिकारियों ने सहभागिता की। प्रस्तुत हैं, कुछेक छायाचित्र:

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन और बैंक

परमजीत सिंह बेवली

यदि हम अतीत में झांककर देखें तो हमारी संपूर्ण संस्कृति तथा इतिहास गुणवत्ता के उदाहरणों से भरा पड़ा है। चाहे मानवीय संबंध हो अथवा राजनैतिक, गुणवत्ता का अपना निश्चित महत्व था। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने व्यावहारिक जीवन में विभिन्न संबंधों में परस्पर गुणवत्ता के नए आयाम स्थापित किए। खजुराहो की मूर्ति, रोम शहर, वेनिस, भारत का ताजमहल आदि ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जो गुणवत्ता का ज्वलंत उदाहरण हैं।

बैंकों का जब राष्ट्रीयकरण किया गया, उस की तुलना जब हम आज की बैंकिंग से करते हैं, तो हम पाते हैं कि बैंकिंग उद्योग में काफी परिवर्तन हो चुका है। यद्यपि परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर रूप से चलती रही है किंतु पिछले 5-6 वर्षों में तो बहुत अधिक परिवर्तन हुए हैं। आज गुणवत्ता पर अधिक जोर देने की आवश्यकता है तथा इसे प्राप्त करने के लिए बैंक की कार्यविधि में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है।

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन क्या है?

इसे अंग्रेजी में टी क्यू एम कहते हैं Total Quality Management का तात्पर्य ग्राहक को प्रथम बार और हर बार संतुष्ट करना है। इसका मतलब है कि अपने कर्मचारियों को इस योग्य बनाना कि वे कठिनाईयां दूर कर सकें और व्यर्थता को समाप्त किया जा सके। सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन वास्तव में सुप्रबंधन के लिए दूसरा शब्द है। सम्पूर्ण गुणवत्ता को प्राप्त करना कठिन या शायद असंभव है। परंतु जिन स्थितियों में इसे प्राप्त कर सकते हैं, उन कंपनियों का सही लक्ष्य हो तो वे सही दिशा में जा सकती हैं।

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन (टी क्यू एम) की आवश्यकता :

1. **ग्राहक अधिक उच्च गुणवत्ता की अपेक्षा करता है :** ग्राहक अधिक सजग और जानकारी रखने वाला होता है। यदि आप उसे अच्छी सेवाएं प्रदान नहीं करते तो वे उसे आपके प्रतियोगी से खरीद लेगा। जब कॉर्पोरेट ग्राहक अपनी गुणवत्ता बढ़ाना आरम्भ कर देते हैं तो वे अपने विक्रेताओं से भी अच्छी कारगुजारी की उम्मीद करते हैं।
2. **प्रतियोगिता अधिक है :** प्रतियोगिता अधिक कठिन है और विश्व स्तरीय बनती जा रही है। पूर्वी एशिया के तीव्रतापूर्वक विकासशील देश प्रायः निम्न दरों पर उत्पादन करते हैं। यह सम्भवतः कम मजदूरी दरों या अधिक निवेश के कारण है। परिणाम स्वरूप बहुत सी मार्किटों में कीमतें गिर गई हैं, अन्यों में गिरनी आरम्भ हो जाएंगी। बहुत सी कंपनियां उससे आधे समय में ही नए मॉडल का उत्पादन कर देती हैं। जितना समय वे पहले लेती थीं। बहुत से उत्पादों का जीवन काल पहले की अपेक्षा बहुत कम होता है।

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन धारणाएं : संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन अधोलिखित सिद्धांतों पर आधारित है :

क. **ग्राहक केंद्रित बनना :** इसका तात्पर्य है कि ग्राहक को उस प्रत्येक कार्य के केंद्र में रखना, जो आप करते हों। इसके लिए कार्मिकों को नियमित रूप से ग्राहकों का व्यवहार जांचने की आवश्यकता होती है। इसमें भीतरी व बाहरी ग्राहक शामिल होते हैं।

ख. **प्रथम समय में सही कार्य करना :** इसका तात्पर्य है कि कार्य को दोबारा करने से बचना, दोषपूर्ण कार्य की कटौती करना, चाहे यह दुकान पर की जाए या फिर प्रबंधन कार्यालयों में।

ग. **निष्ठापूर्वक उत्कृष्टता (गुणवत्ता) लाना :** लगातार उत्कृष्टता स्थापित हुए कार्य पर काबू पा लेती है।

घ. **गुणवत्ता एक अभिवृत्ति है :** गुणवत्ता तक पहुंचने के लिए कोई छोटा रास्ता नहीं है। प्रत्येक को गुणवत्ता के लिए समर्पित होना पड़ता है। इसका तात्पर्य है कि सम्पूर्ण कार्य बल की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाना है।

च. **स्टाफ को बताना कि क्या हो रहा है :** इसका तात्पर्य बेहतर संप्रेषण से है। इसमें टी क्यू एम का एक प्रमुख तत्व टीम को निर्दिष्ट (सूचित) करना है।

छ. **शिक्षित करना और ट्रेनिंग देना :** आपको लोगों को शिक्षित करना और सिखाना है क्योंकि अयोग्य कार्यबल त्रुटियां करता है।

ज. **कार्य की गणना (मापन) करना :** मापन, बैंक को निर्णय लेने की क्षमता देता है और निर्धारित सीमाओं में कार्य करने में सहायक होता है।

झ. **उच्च प्रबंधन को शामिल किया जाना :** यदि वरिष्ठ प्रबंधन को शामिल नहीं किया जाता तो कार्यक्रम बिना बॉस की सहमति के आरम्भ नहीं हो सकता।

ट. **स्टाफ को शक्तियां प्रदान करना :** इसका तात्पर्य है कि स्टाफ को स्वयं विचार करने की क्षमता देना है।

ठ. **कार्य करने के लिए अच्छा स्थान हो :** संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन के लिए कार्य करने के लिए अच्छा स्थान होना आवश्यक है।

7. **टीम वर्क की भावना डाली जाए :** बैंकों में टीम वर्क की भावना समस्त स्टाफ के मानसिक संतुलन को बढ़ाती है।

8. **कार्य प्रणाली को कार्य से ही संगठित नहीं करना :** टी क्यू एम का यह पहलू विभिन्न विभागों के बीच के व्यवधानों को कम करना है। ग्राहकों को उत्पाद उपलब्ध कराने का ध्यान केंद्रित करना है।

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन कार्यक्रम के लाभ :

1. यह बैंकों संगठनों को नेता बनाता है, न कि अनुयायी।
2. यह टीम वर्क को तीव्र करता है।
3. यह ग्राहकों की आवश्यकताओं के प्रति संगठन को और अधिक संवेदनशील बनाता है।
4. यह बैंकों को परिवर्तित होने में तीव्रता प्रदान करता है।
5. यह बैंकों के विभिन्न विभागों के कर्मचारियों को मिलने में सहायता देता है।

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन और बैंक :

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन बैंक के सभी सदस्यों की गुणवत्ता के प्रति व्यापक व अटल निष्ठा है। टी क्यू एम लगातार प्रगतिशील संगठनों एवं बैंकों की आधारशिला दर्शाता है।

1. **ग्राहकों से लगातार सम्पर्क रखना :** ग्राहकों के फीडबैक बैंकरों की सहायता कर सकते हैं जो सेवा के ढंग की अपेक्षा कर रहे होते हैं। अपने ग्राहकों के साथ नियमित और निरंतर संपर्क है तो ग्राहक संतोष महसूस करेगा और पॉलिसी परिवर्तन, प्रबंधन परिवर्तन के बारे में जानकारी मिलते रहने से वह बैंक के प्रति विश्वासवान होगा इससे आप पर ग्राहक का पड़ने वाला दबाव कम हो जाएगा।

2. **नए टार्ड-विलर्ड के रूप में ग्राहक संतुष्टि :** यदि ग्राहक को लगातार कार्य में देर होती है, त्रुटियां प्राप्त होती हैं या अपूर्ण मिलती हैं तो वह बैंक को छोड़ देगा। बैंक को पुराने ग्राहक की अपेक्षा नए ग्राहक ढूंढने में अधिक खर्चा उठाना पड़ता है। ग्राहक की संतुष्टि बैंक का प्राथमिक लक्ष्य होना चाहिए और उन गतिविधियों के लिए संसाधन खर्च करने चाहिए जो बैंक के मूल कामों में परिवर्तन ला सकें।

3. **सामयिक ऋण :** बैंक को ऋण से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी बार-बार न मंगाकर एकबार में ही प्राप्त कर लेनी चाहिए ताकि समयानुसार ग्राहक को ऋण उपलब्ध करवाया जा सके।

4. **बैंक सेवाओं में निरंतर गुणवत्ता :** बैंक के कार्यों में निरंतर गुणवत्ता लाने के लिए, उन पॉलिसियों, कार्य करने के ढंग का पुनः निरीक्षण करना होगा जो पिछले 5-6 वर्षों से चल रही हैं और उन्हें संशोधित करने या बदलने के लिए विचार करना होगा।

5. **कार्य के दौरान संस्थागत प्रशिक्षण :** प्रशिक्षण देना बैंक प्रबंधन की जिम्मेदारी है। सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन का एक केंद्रीय भाव यह है कि प्रशिक्षण और प्रबंधन के मार्गदर्शन से जो कर्मचारी कार्य करते हैं, वे बेहतर स्थिति में होते हैं ताकि इसमें गुणवत्ता लाई जा सके।

6. **संस्थागत नेतृत्व :** बैंकिंग के लिए अच्छा नेतृत्व अनिवार्य है।

7. **भय का निवारण करना :** बैंकों की गुणवत्ता प्रक्रिया में भय का निवारण करना सबसे बड़ा व्यवधान है। यदि बैंकर प्रश्न पूछने में, सुझाव देने से या कुछ नया या अलग करने से झिझकते हैं तो बैंकिंग में गुणवत्ता संगठन कभी नहीं बन सकेगा।

8. **विभागों के बीच के व्यवधान हटाना :** सभी बैंक कर्मचारियों के लिए नितान्त आवश्यक है कि ग्राहक सेवा में गुणवत्ता (सुधार) लाने के लिए वे एक जुट होकर कार्य करें।

9. **स्वयं को बेहतर बनाना :** यदि कर्मचारियों को अपने आपको बेहतर बनाने में मदद मिलती है तो बैंक को फायदा होता है। टी क्यू एम लोगों पर ही आधारित है।

10. **बैंच मार्किंग :** यदि बैंक अपने कार्यों में गुणवत्ता लाने के लिए वास्तव में क्रियाशील है तो उन्हें अपनी प्रतियोगिता का बैंचमार्क करें। बैंचमार्किंग से तात्पर्य है, प्रतियोगी के उत्तम विचारों को विधिवत् हासिल करना। साधारणतया, यह विश्व स्तरीय बैंकों की उत्तम प्रक्रियाएं पहचानने सीखने और लागू करने की विधि है। ऐसा यह समझने के लिए जरूरी है कि कैसे बैंक (जो शीर्ष पर समझते जाते हैं) दूसरे बैंकों से कुछ अलग करते हैं। ताकि प्रक्रियाएं परिभाषित की जा सकें और उनकी तकनीक सुधारी जा सके।

उपसंहार :

अंत में यह कहना होगा कि बहुत से बैंकों तथा उद्योगों में संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन की सफलता दर प्रशंसनीय है। परन्तु भारतीय बैंकिंग सिस्टम की गतिविधियों के लिए टी क्यू एम का अभी समावेश होना है। टी क्यू एम के उपयोग के लिए बैंक प्रबंधन को और अधिक उद्देश्यपूर्ण बनाएंगे। परन्तु इसके उपयोग बैंक प्रबंधन और बैंक कर्मचारियों दोनों से ही व्यवहार परिवर्तन की अपेक्षा है। उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन ग्राहकों पर दीर्घ प्रभाव छोड़ेगा और बैंक की कार्य प्रणाली आर्थिक विकास और सम्पादू सिस्टम के विस्तृत विकास में योगदान देगी।

- सेवानिवृत्त अधिकारी, लीड बैंक, लुधियाना

किसी लालच के बिना मदद करने से आत्म संतोष मिलता है।

हिंदी कार्यशालाएं

प्र.का. राजभाषा विभाग

आंचलिक कार्यालय, हरियाणा

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

आंचलिक कार्यालय, पटियाला

आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

आंचलिक कार्यालय, बरेली

सहभागी

काव्य-मंजूषा

रंग-बिरंगी होली

रविन्द्र परमार

फाल्गुन के मास में, हर्ष और उल्लास में
रंग जाता है हर कोई, रंगो के इस त्योहार में
होती है धूम रंगों की बौछार में।

होली त्योहार है रंगो का।
मौज मस्ती और उमंगों का।
आती है होली, लेकर रंगो की बौछार।
ऐसा है होली का खुशियों भरा त्योहार।

भर-भर पिचकारी उड़ती है रंगो की बौछार।
छाई रहती है चहुं ओर रंग-बिरंगी बहार।
बड़ी पुरानी है रंगो के खेलने की ये रीत।
कहीं बजते ढोल, कहीं गूंजते मंगल गीत।
हर तरफ होता, हर्ष, उल्लास,
न होती जीत, न होती हार।।

चलती है गली मोहल्ले में दोस्तो की टोलियाँ
मचाती हुई धूम, करती हुई ठिठोलियाँ।
रंगों के रंग में हर कोई जाता है रंग
नहीं दिखाता है कोई भी चेहरा बेरंग
न होता जाति धर्म का भेद, दिखते सभी, एक संग।

प्रधान कार्यालय, अग्रिम विभाग

माँ तुम्हारी याद आती है

अनिल शुक्ला

हर मौसम की तरह सुबह में
अधिकतर नींद अचानक खुल जाती है।
हर दिन, पलभर में
ये भ्रम तोड़ जाती है
कि किसी की उँगलियाँ
मेरे बालों को सहलाती हैं
मालूम पड़ता है, जैसे
सुबह की मंद पवन जैसे लहराती है।
माँ। तब तुम्हारी बहुत याद आती है।

यूँ दूर रहने की आदत सी हो गई है,
बाहरी खाना जीवन शैली हो गई है।
स्वाद जीभ को आता नहीं
ध्यान किसी चीज पर जाता नहीं
रसहीन पकवानों से काया मैली हो गई है।

जब कभी देखती हूँ कि
स्कूल की घंटी पर
छोटे बच्चे एक दिशा में
दौड़ चले जाते हैं
जहाँ उनके इंतजार में कोई खड़ा है,
जिसकी अंगुली पकड़कर वे आश्वस्त हो जाते हैं।
उनकी माँ, वात्सल्य पर लालायित होते-होते
जब नज़र अपनी सूनी हथेली पर जाती है,
माँ। तब तुम्हारी बहुत याद आती है।

जब सारे प्रयासों के बाद भी
सफलता नहीं मिल पाती है
तब मेरे सारे प्रयासों में,
तुम्हारे स्पर्श की कमी नज़र आती है
पर किसी भी रूप में हो,

तुम्हारी यादों की परछाई मुझमें स्फूर्ति भर जाती है।
दिन के चौबीस घंटों, हर मिनट, हर सेकण्ड,
जब घड़ी की सुईयाँ टक-टक करती आगे बढ़ती जाती हैं।
माँ। तब तुम्हारी बहुत याद आती है।
माँ तुम्हारी याद को साथ ले, मुझे आगे बढ़ना है।
तुम्हारे हर-एक सपने को मुझे साकार करना है।

प्रधान कार्यालय, अग्रिम विभाग

आँचलिक कार्यालय गांधी नगर का उद्घाटन

छपते छपते

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की स्वर्णिम परियोजना के अंतर्गत बनाए गए फाइनेंशियल हब, गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक सिटी (GIFT CITY) में दिनांक 17.04.2017 को बैंक के आँचलिक कार्यालय गांधी नगर का उद्घाटन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिंदर बीर सिंह (आई.ए.एस) के कर-कमलों द्वारा किया गया। उद्घाटन के पलों को ऐतिहासिक बनाते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय ने कार्यालय की बहुत प्रशंसा की और कहा कि इस भव्य और आइकॉनिक इमारत में पंजाब एण्ड सिंध बैंक का कार्यालय होने से निश्चय ही बैंक ने नई ऊंचाइयाँ प्राप्त कर ली है। आँचलिक प्रबंधक श्री गोपाल कृष्ण ने उपस्थितजनों को उत्कृष्ट ग्राहक सेवा देने का और बैंक को हर क्षेत्र में आगे ले जाने का आह्वान किया। इस अवसर पर महाप्रबंधक श्री आर. के. बंसल, गिफ्ट सिटी के प्रबंध निदेशक श्री अजय पांडे तथा अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन - ध्येय है

उत्तम दरों पर हाउसिंग, ऑटो और उपभोक्ता लोन

- न्यूनतम प्रोसेसिंग शुल्क
- ब्याज केवल प्रतिदिन शेष राशि पर
- कोई अग्रिम ईएमआई नहीं

हाउसिंग लोन

न्यूनतम ईएमआई ₹ **753** प्रति लाख
(40 साल के लिए ₹ 75 लाख की ऋण राशि तक)

उपभोक्ता लोन

न्यूनतम ईएमआई ₹ **2200*** प्रति लाख
(ऋण 5 साल की अवधि के लिए)

ऑटो लोन

न्यूनतम ईएमआई ₹ **1609*** प्रति लाख
- ऋण अवधि 7 वर्ष के लिए

प्रक्रिया समय 48 घंटे

1800 419 8300

www.psbindia.com

प्रकृति की रक्षा, पृथ्वी की रक्षा